अध्याय 03 - पुस्तकालय एवं समाज का संबंध

3.1 पुस्तकालय

3.11 अर्थ

3.12 आवश्यकता

3.13 इतिहास

3.14 महत्व

3.15 प्रकार

3.16 कार्य

3.2 समाज

3.21 पुस्तकालय एवं समाज

3.22 ग्राम्य समाज एवं पुस्तकालय

3.23 ग्रामीण समाज एवं उनकी सूचना आवश्यकता

निष्कर्ष

'अध्याय - 03
पुस्तकालय एवं समाज का संबंध

3.1 पुस्तकालय

3.11 अर्थ

मनुष्य शब्द संस्कृत धातु 'मन' से बना है । 'मन' धातु का अर्थ मनन अथवा चिंतन करना है। सोचना, समझना और प्रकट करना मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृति है । मनुष्य मनन करता है, चिंतन करता है फिर उसे अभिव्यक्त करता है। प्रत्येक मनुष्य का एक सामान्य गुण होता है कि वह कुछ न कुछ सोचता है , उसे समझता है और फिर उसे व्यक्तिगत या सामुहिक कल्याण या विकास हेतु प्रकट करता है। यह अभिव्यक्ति वस्तुत: उस व्यक्ति का एक विचार होता है जो किसी एक विशेष विषय पर होता है। चूंकि मनुष्य एक वैचारिक एवं सामाजिक प्राणी होता है अत: स्वभावत: वह समाज में रहना पसंद करता है अपने विचारों को वह उसी समाज में अभिव्यक्त करता है उसकी यह अभिव्यक्ति मौखिक, लिखित अथवा अन्य किसी सार्थक संकेत के माध्यम से होती है।

मनुष्य व्दारा अभिव्यक्त कोई भी विचार जिसका उपयोग तात्कालिक है तब वह मौखिक होती है, परन्तु जब विचार स्थायी महत्व का होता है तब उसकी अभिव्यक्ति लिखित या किसी सार्थक संकेत (जैसे चित्रात्मक) के रुप में होती है इन्हीं लिखित स्थायी विचार से विभिन्न अच्छी परम्परा, संस्कृति एवं सभ्यता का जन्म हुआ है।

अपने विचारों को एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य तक , एक समाज से दूसरे समाज तक तथा एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए उन विचारों का लिपिबद्ध होना जरुरी है। ऐ.जे. गेल्ब ने कहा है लेखन के अभाव में सभ्यता का अस्तित्व ही नही रहता। अत: विचारों को लेख बद्ध किए जाने के साथ-साथ सभ्यता एवं संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आती चली गई।

प्राचीन काल में विचारों को लेखबध्द प्राय: तीन प्रकार से किया जाता था -

1. चित्रात्मक लेखन (चित्रों से विचारों की अभिव्यक्ति)
2. भावात्मक लेखन (भावों से विचारों की अभिव्यक्ति)
3. ध्वन्यात्मक लेखन (स्वर (आवाज) से विचारों की अभिव्यक्ति)

ध्वन्यात्मक लेखन के अविष्कार से ही ग्रंथ या पुस्तक के निम्न स्वरुप सामने आए -

1. पट्टी - मिट्टी या पत्थर की (Tablets)
2. सूची या नामावली (Scroll)
3. पेपीरस (Papyrus)

4. छालपत्र (Parchment)

5. पाण्डुलिपि (Codex) आदि , आदि।

लेखन कला के विकास के साथ-साथ क्रमश: स्थायी महत्व के विचारों को उपर्युक्त भौतिक माध्यमों से लिपिबद्ध किया जाने लगा। इस स्थायी महत्व के विचारों को लिखित साहित्य के रुप में अपनी भावी पीढ़ी के उपयोग के लिए संकलित एवं सुरक्षित रखने की प्रवृति शिक्षित तथा सम्पन्न समुदाय में आरंभ हुई। अति प्राचीन काल में जब इस प्रकार स्वयं और दूसरों द्वारा लिखित साहित्य को संकलित करने का कार्य प्रारंभ हुआ तब लेख बद्ध तथा चित्रात्मक का संग्रह, ग्रंथ संग्रह, संग्रहालय और पुस्तकालय के विचारों ने क्रमश: मूर्तरुप धारण किया। ' ग्रंथों को रखने का स्थान ' इस अर्थ से ही ग्रंथालय (पुस्तकालय) शब्द का जन्म हुआ।

ग्रंथालय अथवा पुस्तकालय अंग्रेजी शब्द 'लाइब्रेरी ' का पर्याय है। 'लाइब्रेरी ' शब्द लेटिन व फ्रेंच्च के निम्न दो शब्दों से मिलकर बना है।

लैटिन: Libreria or Librarius (= of books)

फ्रेंच : Libra or Liber (= books) + arius - ary (= of)

लिबर का अर्थ पेड़ के तने का छाल है। प्राचीन काल में चूंकि छाल लिखने के काम में लाया जाता था अत: लिबर शब्द का प्रयोग पुस्तक के लिए किया गया। ' एरियस' का परिष्कृत प्रत्यय 'एरी' लिबर शब्द के साथ जोड़कर लाइब्रेरी कहा गया (एरी प्रत्यय का अर्थ 'का ' है।) अर्थात पुस्तक रखने का स्थान पुस्तकालय कहलाया। चूंकि प्राचीन काल में पुस्तकें भावी पीढ़ी के लिए सुरक्षित रखी जाती थी अत: पुस्तकालय शब्द का प्रयोग तत्कालीन उद्देश्य के अनुरुप था।

संस्कृत अथवा हिन्दी शब्द 'ग्रंथालय' या 'पुस्तकालय शब्द भी निम्न शब्दों से मिलकर बने हैं -

ग्रंथ + आलय (= घर)

पुस्तक + आलय (= घर)

ग्रंथ या पुस्तक + लय (= डुबना या मग्न हो जाना) अर्थात 'पुस्तक' या ग्रंथ का घर अथवा रखने का स्थान है। यदि हम परिष्कृत प्रत्यय 'लय' का अर्थ देखें तो पुस्तक में डूबना या मग्न होना भी पुस्तकालय अथवा ग्रंथालय है। इन शब्द से बने शब्द से वह स्थान सूचित होता है जहां जाने पर पाठकों का मन ग्रंथ में वर्णित विषय के अध्ययन व विश्लेषण में मग्न हो जाता है। यही अर्थ ग्रंथालय अथवा पुस्तकालय से अभिप्रेरित है।

परिभाषा

आधुनिक युग में पुस्तक रखने का स्थान एक व्यवसायिक स्थल भी हो सकता है। समय के साथ ग्रंथालय जगत में एवं ग्रंथालय के उद्देश्य में आए भारी परिवर्तनों से आज पुस्तकालय अथवा ग्रंथालय शब्द की परिभाषा अतिविस्तृत हो गई है - विभिन्न ग्रंथालय विज्ञानी, संघों एवं विषय विशेषज्ञों

ने ग्रंथालय की आधुनिक परिभाषा दी है जिनमें से कुछ निम्न प्रकार है -

यूनेस्को 'प्रकाशित ग्रंथ और पत्रिकाओं तथा अन्य पाठ्य एवं श्रव्य-दृश्य सामग्रियों को उनके उपयोग करने वालों की सूचना, शोध शैक्षणिक या मनोरंजक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक है प्रदान करने और उनकी व्याख्या करने में समर्थ है' पुस्तकालय कहते हैं।

डॉ. एस.आर. रंगनाथन - 'पुस्तकों पाठकों और पुस्तकालय इन तीनों का त्रित्व ही पुस्तकालय है।'

इन्होंने दूसरी परिभाषा इन शब्दों में दी है 'ग्रंथालय जीवन पर्यन्त स्वाध्याय करने का एक सार्वभौम साधन है '।

इनसाइक्लोपिडिया आफ ब्रिटेनिका - 'मुद्रित या लिखित सामग्री के उस संग्रह को पुस्तकालय कहते है जो कि अध्ययन और अनुसंधान या सामान्य पठन या दोनो उद्देश्य के लिए व्यवस्थित और संगठित किया गया हो '।

3.12 आवश्यकता

मानव जाति में ज्यों-ज्यों सभ्यता और संस्कृति का विकास होता चला गया वैसे-वैसे मौलिक आवश्यकताओं रोटी, कपड़ा और मकान के अलावा अन्य विकास की ओर भी उसके मस्तिष्क ने कार्य करना शुरु किया। विकास एक से दूसरे व्यक्ति, एक परिवार से दूसरे परिवार, एक समाज से अन्य समाज एवं एक देश से दूसरे देश की ओर बढ़ता है इस तरह विकास की प्रक्रिया पूरी दुनिया में फलती फूलती है। यह तय है कि जो व्यक्ति या समाज जितना शिक्षित होगा वह उतना ही अपना विकास करेगा। शिक्षित व्यक्ति या समाज अपने चारों ओर होने वाली प्रत्येक घटना को ध्यान पूर्वक देखता है उस पर चिंतन एवं मनन करता है फिर उस पर अपने स्वयं का विचार रखता है और विश्व में होने वाली प्रत्येक विकास की प्रक्रिया पर ध्यान रखता है। उसके चिंतन एवं मनन करने पर एवं स्वयं के एक विचार बनाने में बहुत सी मिलती-जुलती घटनाओं या विचारों को पढ़ना एवं समझना पड़ता है यहीं पर उसे एक ऐसी संस्था की आवश्यकता महसूस होती है जो ऐसे साहित्य अथवा विचार उपलब्ध कराएं जो कि उसके विचारों को एक निश्चित दिशा देने में सक्षम हो सके, ऐसी संस्था पुस्तकालय ही हो सकती है। आधुनिक युग में जहां किसी विषय में प्रत्येक सेकेण्ड में एक विचार आते हैं, एक साहित्य आता है जहां एक ही विषय मे विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में एक साथ शोध हो रहे हैं वहां किसी एक व्यक्ति के लिए यह सम्भव नहीं है कि अपनी आवश्यकताओं के लिए वह इन सब का संग्रह कर सके। तब पुस्तकालय ही एक ऐसी संस्था के रुप में सामने आती है जहां व्यक्ति को अपनी मानसिक संतुष्टि, विचारों की अभिव्यक्ति के अलावा मनोरंजन हेतु विभिन्न प्रकार के विचारों या साहित्य का संग्रह मिलता है इन आधारभूत बिन्दुओं को ध्यान में रखें तो निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट होता है कि समाज को एक पुस्तकालय की कितनी आवश्यकता है -

1. यह भूतकाल की सांस्कृतिक और साहित्यिक ग्रंथों व पाण्डुलिपि का संकलन करके उसे सुरक्षित रखता है जिससे भावी पीढ़ियां उससे लाभ उठा सकें और तत्कालीन समाज के अनुसंधान में सहायता मिल सके ।

2. पुस्तकालय सार्वभौम शिक्षा स्व-शिक्षा का एक प्रमुख साधन है। यह अपने भीतर आयु, जाति, रुप, रंग और देश का बंधन नहीं रखता। यह समाज के बालक,वृद्ध, स्त्री-पुरुष, धनी, निर्धन, विद्वान एवं मंद बुद्धि सब को उनकी रुचि एवं सुविधा के अनुसार स्वाध्याय की सुविधा देता है इस प्रकार वह बिना किसी भेद-भाव के समाज के प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं शिक्षा प्राप्त करने में जीवन भर सहायता करता है।

3.पुस्तकालय निरक्षर प्रौंढ़ो को साक्षर बनाने का भी एक अच्छा साधन हैं। पुस्तकालय में यदि निरक्षर को पुस्तके पढ़कर सुनाई जाए तो उन्हें साक्षर बनाने में विशेष सुविधा मिलेगी।

4. अज्ञानियों के द्वार तक ज्ञान को नि:शुल्क रुप से पहुचाना और उनको शिक्षा की ओर अग्रसर करना एक महान कार्य हैं इस ज्ञान रुपी दान की समता विश्वदान (विश्व को दान रुप में दे देना।) भी नहीं कर सकता ।

5. साक्षरता और शिक्षा को बढ़ाना।

6. वर्तमान शिक्षा प्रणाली के अनुसार विद्यार्थी स्कूल व महाविद्यालयों में एक निश्चित अवधि व एक निश्चित पाठयक्रम के अध्ययन के लिए एक तरह से बाधित होते हैं परन्तु यदि उसे और अधिक ज्ञान प्राप्त करने की ललक व इच्छा हो तो उनकी यह आवश्यकता पुस्तकालय द्वारा ही पूर्ण हो सकती है। पुस्तकालय ऐसे व्यक्ति या विद्यार्थी की स्वशिक्षा को बनाए रखता है और उनके व्यक्तित्व के विकास करने में सहायक होता है।

7. यह प्रत्येक व्यक्ति को सभी विषयों पर अद्यतन (Up to date) तथ्य और सूचनाएं देने की व्यवस्था करता है।

8. पुस्तकालय बच्चों को अपनी ओर आकृष्ट करके उनमें अध्ययन की रुचि का बीज बो देता है और उनमें पढ़ने की आदत का विकास करता है।

9. विविध पाठ्य सामाग्रियों के माध्यम से समाज को संतुलित और अद्यतन विचार देना और उसके द्वारा राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक विचारों को परिष्कृत करना।

10. शोध शक्ति का संरक्षण कर शोध कार्य को संगठित तक्षा क्रमिक रुप देना।

11. पुस्तकालय अपने को एक सामुदायिक केन्द्र के रुप में परिवर्तित करके ज्ञानप्रद भाषणों, प्रतियोगिताओं , साहित्यिक गोष्ठियों एवं सम सामायिक चर्चाओं तथा दृश्य-श्रव्ध उपकरणों के द्वारा जनता की शिक्षा का विश्वविद्यालय बन सकता हैं। इस प्रकार वह समाज को विश्व बंधुत्व एवं सह-अस्तित्व के उच्च लक्ष्य तक पहुंचाने मे सहायक होता है।

12. उद्योग धंधों में संलग्न व्यक्ति एवं अधिकारी वर्ग को नवीनतम सूचना एवं विचारों से अवगत रख कर हर क्षेत्र में उत्पादन को बढ़ाना।

13. लिखित विचारधाराओं और भावों कों संतुलित विधि से प्रत्येक व्यक्ति को प्रदान करता है जिससे उस व्यक्ति को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय कार्यो के साथ ही अपने राजनैतिक धर्मो का भी पालन करने में सहायता मिल सके।

14. पुस्तकालय एक राष्ट्र निर्माणकारी संस्था है। यह महान विद्वान, धुरंधर राजनीतिज्ञ, साधकों, विचारकों एवं समाज सुधारकों के अमूल्य ज्ञान को पुस्तकों के रुप में संग्रह करके जनता को उनके उपयोग के लिए अवसर देता है। इस प्रकार वह राष्ट्र का निर्माण व समाज का कल्याण करता है।

15. लोगों को अवकाश के समय का सदुपयोग करने के लिए लाभप्रद एवं रुचिकर साहित्य प्रदान करता है।

पुस्तकालय विषय के महान विद्वान डॉ. एस.आर रंगनाथन ने पुस्तकालय की तुलना एक बिजली घर से करते हुए कहा है कि 'पुस्तकालय एक ऐसा सामाजिक संस्थान है जो समाज द्वारा समाज के लिए स्थापित किया जाता है, इसका प्रमुख उद्देश्य समाज के प्रत्येक व्यक्ति को प्रकाशित पुस्तकों द्वारा जीवन भर स्वशिक्षा का अवसर प्रदान करना है। इन पुस्तकों का संगठन, प्रबंधन एवं सेवा उन लोगों द्वारा होती है जो सोये हुए विचारों को क्रियाशील एवं वैकल्पिक अवस्था में परिवर्तित करने में प्रवीण होते है। इस प्रकार पुस्तकालय एक ऐसा छोटा सा बिजली घर है जो पुस्तकों (पाठ्य सामग्री) में बंधी विचार शक्ति को विश्व के मस्तिष्क में डालने, विकसित करने तथा प्रसार करने के लिए खोला जाता है।'

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति पूर्वजनो द्वारा संकलित ज्ञान राशि का उत्तराधिकारी हैं एवं संकलित ज्ञान राशि को जानना एवं उस की सहायता से अपना मानसिक विकास करना उसका अधिकार हैं। इसलिए समाज का यह कर्तव्य है कि वह उसकी बुद्धि को परिपक्व पूर्ण करने हेतु उपलब्ध सभी ज्ञान विचार उसे प्रदान करें एवं उसके लिए आवश्यक समस्त सूचनाए उसे प्रदान करें इन उददेश्यो की पूर्ति के लिए ग्रंथालय एक आवश्यक संस्था हैं जिसे स्थापित करना प्रत्येक समाज के लिए एक आवश्यक कार्य हैं।

3.13 इतिहास

सामान्य रुप में ग्रंथ शब्द अभिव्यक्ति के समस्त भौतिक माध्यमों का प्रतिनिधित्व करता है अत : अभिव्यक्ति के भौतिक माध्यम का जिस दिन अविष्कार हुआ उसी दिन से लिखित विचारों का संग्रह होने लगा और इस संग्रह को जिस स्थान पर रखा जाने लगा उसे ही प्रारंभिक समय में पुस्तकालय कहा गया। परन्तु पुस्तकालय का जो वर्तमान स्वरुप है उस स्वरुप में आने में पुस्तकालय को सैंकड़ों साल लगे। अतः पुस्तकालय के उद्भव व विकास की प्रक्रिया का इतिहास बरसों पुराना हैं।

3.131 प्राचीन विश्व एवं पुस्तकालय

संसार में प्राचीनतम पुस्तकालयों का विवरण मंदिरों और राजभवनों के अभिलेखों (आर का इब्ज) के संग्रह के रुप में मिलता हैं। मनुष्य की आवश्यकता तथा भावी पीढ़ी को सम्पूर्ण साहित्यिक कृतियों को हस्तांतरित करने की इच्छा ने लेखन कला, लेखन सामग्री तथा ग्रंथ के प्राचीन रुप मिट्टी व पत्थर की पट्टिकाएँ (clay tablets), सूची या नामावली (roll or scroll), पाण्डुलिपि , पेपीरस, छाल पत्र , ताड़ पत्र, भोज पत्र और कागज पर लिखे हस्त लिखित ग्रंथों को क्रमशः जन्म दिया। पूर्वजों को भावी पीढ़ी के उपयोग हेतु

सुरक्षित रखने के मनुष्य के उद्‌देश्य ने ग्रंथालय को मूर्त रुप प्रदान किया।

उपलब्ध ऐतिहासिक विवरणों एवं अन्य साधनों से प्राप्त विवरण के आधार पर यह माना गया है कि पुस्तकालय का उद्‌भव पश्चिमी देशों से ही हुआ। सर्वप्रथम सुमेरियन लोगो ने लेखन कला को जन्म दिया। इन लोगों ने अपने राजनैतिक , सामाजिक , धार्मिक तथा दार्शनिक विचारों को और जनता पर लगाए गए करो का हिसाब मिट्‌टी की पट्‌टिकाओं में लेख बद्ध किया। ईसा पूर्व 2700 वर्ष पहले ही इन्होने अपने लेखबद्ध विचार तथा अभिलेखों को सुरक्षित रखने के लिए पुस्तकालय की स्थापना की। 'टेल्लो' नामक उनके एक प्रमुख पुस्तकालय में तीस हजार पट्‌टिकाएँ संग्रहित थी।

सुमेरिया में पुस्तकालय का प्रथम विकास दृष्टिगोचर होता है। इसके बाद मिश्र (इजिप्ट) का नाम आता है। यहीं पर सबसे प्राचीन लेखन सामग्री 'पेपीरस' पाई गई। प्राचीन मिश्र के विद्वान हेरोडोटुस, प्लेटो , डियोडोट्स आदि के ग्रंथों से यह ज्ञात होता है कि प्राचीन मिश्र में मंदिरों व अभिलेखागारों में साहित्य संग्रह किये जाते थे। ईसा पूर्व 2500 और 1250 की कालावधि मे गिजेह और शेबस नामक स्थान में पुस्तकालय विद्यमान थे। पुस्तकालय में उपलबद्ध ग्रंथ पुरोहितों तथा शासकीय अधिकारियों द्वारा लिखित धार्मिक एवं शासकीय अभिलेख 'पेपीरस' रोलो सूची के रुप में अंकित होते थे। जिन्हें धातु या मिट्‌टी के घड़ों के अन्दर रखा जाता था।

मिश्र में प्राचीन पुस्तकालय की कालावधि में उसी प्रकार के प्रशासनिक अभिलेखों का संग्रह और साहित्यिक अवशेष असीरिया-बेबीलोन की सभ्यता में भी पाते है। असुरवानीपाल (668-628) ईसा पूर्व असरिया नरेश के अन्तिम राजवंश का पुस्तकालय आकार में सर्वश्रेष्ठ था। यहाँ उल्लेखनीय घटनाएँ , कानून, इतिहास , धर्म और इतिहास वहाँ क्लेटेबलेट्स के रुप में संग्रहित थे, इस पुस्तकालय में साहित्य विषय वार व्यवस्थित की गई थी। संग्रह में साहित्य की स्थिति को निर्दिष्ट करने के लिए उन पर मुद्रांक अंकित रहता था। असुर वानीपाल ने असीरिया और बेबीलोन के ग्रंथो के संग्रह हेतु अनेक प्रतिलिपिकों को नियुक्त किया। पाठ्य सामग्रियों में लगभग बीस हजार क्लेटेबलेट्स, चमड़े पर लिखी स्क्रोल्स और चर्म पत्र संग्रहित थे। इन सामग्रियों की सूचियां वहाँ उपलब्ध थी उसके पुस्तकालय का ध्येय राज्य तथा चर्च की सेवा करना, प्रजा को शिक्षा देना तथा वैज्ञानिक ज्ञान का प्रसार करना था ।

सेमेटिक मूल के अन्य प्राचीन जातियों में फोनेशियम , आरमेनिया के लोग और यहूदी आते हैं। यूनानी तथा पश्चिमी सभ्यता के विकास में इन लोगों का उल्लेखनीय योगदान है। फोनेशियम लोगो ने मिश्र से लेखन सामग्री पेपीरस तथा वर्णमाला ग्रहण की और बाद में दूसरे देशों ने इसे उनसे लिया ।फोनशियम लोगों का साहित्य यहूदी साहित्य से मिलता - जुलता है इससे इस सम्भावना को बल मिलता है कि उन्होने यहूदीयों से प्रेरणा ली। यहूदी के पुस्तकालय मंदिरो से संबद्ध थे और वहाँ रोल्स और टेबलेट्स थे। प्राचीन पुस्तकालयों के इतिहास में इसके बाद यूनानी सभ्यता का युग आता है। इस सभ्यता में ईसा पूर्व छठी सदी में लिखने का आधार पेपीरस था पाँचवीं सदी में यहाँ शिक्षा का सार्वजनिक रुप प्रकाश में आता है। तत्कालीन राजा हेलोनिस्टिक ने रोल, वैक्स टेबलेट्स व पाण्डुलिपि (कोडेक्स) के रुप में काफी पाठ्य

सामग्री प्रकाशित कराई इनमें दर्शन, साहित्य , इतिहास, विज्ञान, गणित, धर्म व राजनीति से संबंधित विषय थे। इस समय अनेक राजकीय एवं शासकीय पुस्तकालय थे वही पर अफलातून और अरस्तू के सम्पन्न व्यक्तिगत पुस्तकालय भी थे। टोलेमिक शासन की लगभग ढाई शताब्दी के बीच टोलेम्पस प्रथम तथा द्वितीय ने ईसा पूर्व 300 के करीब मिश्र में अलैंक्जेन्ड्रिया नामक स्थान पर एक विशाल पुस्तकालय की स्थापना की इस पुस्तकालय में लाखों की संख्या में पेपीरस, रोल संग्रहित थे विषय के विद्वानों के द्वारा सम्पादित साहित्य वहाँ संचित था। यूनानी साहित्य का वहाँ व्यवस्थित अध्ययन किया जाता था, और लेखको की प्रमाणिक प्रतियां संग्रह एवम् विक्रय हेतु रखी जाती थी। अध्ययन एवं शोध से इस पुस्तकालय का इतिहास अत्यंत गौरवशाली प्रतीत होता है यहाँ ग्रंथों की विषयानुसार लेखक एवं आख्या की वर्णानुक्रम सूची बनाई गई थी। कहा जाता है कि उसमें ग्रंथगत विषय, सारांश और लेखको की ग्रंथ सूची दी हुई थी। उत्खनन से ज्ञात होता है कि इस पुस्तकालय के भवन मे एक खुला हुआ मैदान तथा दो मंजिला द्वार मण्डप था , इस द्वार मण्डप मे अध्ययन कक्ष था, प्रवेश कक्ष में मूर्तियॉ सुसज्जित थी और शेष कमरे संग्रहागार के रुप में पाये गये। विभिन्न श्रोतो से प्राप्त तथ्य से यह ज्ञात होता है कि इस पुस्तकालय में संग्रहित साहित्य का उपयोग शोध सामग्री के रुप में विद्वानों के एक छोटे समूह के द्वारा किया जाता था। किन्तु धीरे-धीरे इसके उपयोगकर्ता की संख्या में वृद्धि होती चली गई ।

प्राचीन यूनानी पुस्तकालयों में ईसा पूर्व 2री सदी में यूमेनस (197-159 बी सी) द्वितीय द्वारा स्थापित वर्गेनस नामक स्थान पर स्थापित पुस्तकालय हैं यहाँ दो लाख पाठ्य सामग्री संग्रहित थी। करीब सौ साल तक साहित्य एवं कला के विकास मे इस पुस्तकालय का बड़ा योगदान था । चौथी सदी में यूनानी सभ्यता के बाइजेण्टाइन साम्राज्य समूह के कन्टेन्टाइन ने बाइजेण्ट्यून में एक विशाल राजकीय पुस्तकालय की स्थापना की। यह स्थान उस के राज्य की राजधानी भी थी, इस पुस्तकालय में 5वीं सदी में 1,20,000 ग्रंथ संग्रहित थे। यूनानी सभ्यता में काले समुद्र पर यूनानी उपनिवेश हेरेकूश और सिसली में सिरेकूस में स्थापित ग्रंथालय भी उल्लेखनीय है। ईसा पूर्व द्वितीय सदी के मध्य से रोम के सेनापतियों ने यूनानी पुस्तकालयों की लूट की व अन्य सामग्री के साथ अपने यहाँ लाना शुरु किया। अवशिष्ट पुस्तकालयों को बाद में मुसलमान आक्रमणकारियों ने नष्ट कर दिया।

रोम ने यूनानी एवं मिश्र संस्कृति से अनेक वस्तुएँ वंशगत रुप में प्राप्त की थी। दूसरी सदी ई.पू. में रोम के सेनापतियों ने यूनान, मिश्र तथा एशिया के युद्ध स्थलों से वापस होते समय अपने साथ लूट के माल के रुप में वहॉ के पुस्तकालय से पाठ्य सामग्री को भी लाना शुरु किया फिर ये पाठ्य सामग्री यहाँ के पुस्तकालय में जुड़ती चली गई। ईसा पूर्व प्रथम सदी में रोमन वासियों एवं शासको में पाठ्य सामग्री के प्रति अपार प्रेम था। वे पाठ्य सामग्री को सजाकर रखते थे। पुस्तकों का संग्रह एवं पुस्तकालय स्थापित करने में विशेष रुचि रखते थे वे पुस्तकालय के सरंक्षण एवं विकास पर काफी धन खर्च करते थे। ईसा पूर्व 39 और 27 के समय में असिनियस पोलियो ने प्रथम जन

पुस्तकालय की स्थापना की। इसके पश्चात् आगस्ट्स ने दो पुस्तकालय (एक अपोलो के मंदिर में पैलेटाइन में और दूसरा पार्टीकस ओल्टोविया में) स्थापित किया। इस प्रकार ई. सन् चार सौ तक रोम में 28 जन पुस्तकालय थे। पोप डेमेक्स ने चौथी सदी के मध्य रोम नगर में प्रसिद्ध वेटिकम पुस्तकालय की स्थापना की। इस प्रकार प्राचीन इटली के ग्रंथालय या तो व्यक्तिगत होते थे या फिर शासन द्वारा संचालित जन पुस्तकालय। नगर का कोई भी राज प्रसाद अथवा कोई भी बड़ा भवन अपना निजी पुस्तकालय स्थापित करना नहीं भूलता था। प्राइवेट पुस्तकालयों में 30,000 से लेकर 60,000 तक रोल्स थे। गृहस्थायी उनको तैयार कराने के लिए या तो शिक्षित दासों को रखता था अथवा वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति अत्यधिक विकसित हुए पुस्तक व्यवसाय सें करता था। जन पुस्तकालयों की व्यवस्था विद्वान अथवा पुजारियों के हाथ थी। ग्रंथालयों में ग्रीक या रोमन भाषा में लिखें गए ग्रंथ थें, ग्रंथ रोल, टेबलेट्स, कोडेक्स के रुप में होते थे। इनमें विभिन्न विषय जैसे दर्शन, कानून, राजनीति, धर्म,विज्ञान और गणित से संबंधित लेख थे। विषय या शीर्षक के द्वारा ग्रंथो का वर्गीकरण किया जाता था। ग्रंथालय भवन का द्वार पूर्व की ओर होता था ताकि पर्याप्त सूर्य का प्रकाश सीधे पुस्तकालय में आए। वाचन कक्ष अलग से होते थे। पुस्तकालय में तीन प्रकार के कर्मचारी होते थे - प्रशासक (प्रोक्यूरेटर) पुस्तकालय का प्रबंध देखने वाले, व्यवसायिक कर्मचारी (बिब्लियोथेका) ग्रंथों का वर्गीकरण, सूचीकरण , संयोजन एवं सुरक्षित रखने का कार्य एवं ग्रंथालियों का कार्य प्रतिलिपि तैयार करना होता था। सार्वजनिक ग्रंथालय सामान्यतया मंदिरों से संबध्द होता था जिनका उपयोग बिना किसी भेद - भाव के समस्त लोगों को (धनी,गरीब,गुलाम आदि) करने दिया जाता था। इस प्रकार रोमन पुस्तकालय के संबंध में कहा जा सकता है कि प्राचीनतम समय में भी वहाँ पर शिक्षा का महत्व था एवं शिक्षा से संबंधित पठन सामग्री का संग्रह अभूतपूर्व था जिससे सम्पन्न पुस्तकालयों का अस्तित्व तत्कालीन समय में दृष्टि गोचर होता है एवं वहाँ के शासक, विद्वान एवं जनता पुस्तकालयों की उपयोगिता से सर्वथा परिचित थे।

प्राचीन काल में पश्चिमी देशों में पुस्तकालयों के अस्तित्व के अध्ययन से पता चलता है कि मिश्र, यूनान , रोम आदि में विकसित पुस्तकालय अपनी चरम सीमा में था एवं रचनायें उत्कृष्ट थी। पश्चिम के अनेक देशों में तब पुस्तकालय विद्यमान थे वही हम पूर्वी देशों में चीन एवं भारत में ग्रंथालय का अस्तित्व पाते है।

पूर्वी देशों में सर्व प्रथम चीन में पुस्तकालय का उद्भव एवं विकास दृष्टि गोचर होता है। हेन राजवंश ने ईसा पूर्व 206-220 ई. सन् में एक राजकीय पुस्तकालय की स्थापना की उस ग्रंथालय में संग्रहित ग्रंथों को मुख्य और 36 उपनिवेशों में वर्गीकृत कर व्यवस्थित सूची का निर्माण किया गया था। चीन में कागज का निर्माण सर्व प्रथम प्रथम सदी में हुआ था। कागज के अविष्कार एवं छपाई के अविष्कार के पश्चात् समस्त प्रकार के साहित्य का प्रकाशन प्रारंभ हुआ इसके पश्चात ही वहाँ व्यक्तिगत पुस्तकालयों का विकास दृष्टिगोचर होता हैं। सातवीं सदी तक टैंग राजवंश ने (सन् 221-589) और स्यूई राजवंश (सन् 590-617) ने चीन में पुस्त कालयों की स्थापना और उनके विकास के

लिए उल्लेखनीय कार्य किया। स्यूई राजवंश ने बौध्द ग्रंथों के संग्रह और संरक्षण के कार्य में वहाँ बहुत योगदान दिया ।

भारतीय सभ्यता और संस्कृति के इतिहास का अध्ययन करने से पता चलता है कि प्रारंभ में भारत में शिक्षा मौखिक होती थी सारा वैदिक युग श्रुति काल के रुप में जाना जाता है तब गुरु से सुनकर शिष्य वेदों को कंठस्थ कर लेते थे। इस प्रकार कर्ण परम्परा से युगों-युगों तक वेदों को सुरक्षित रखा गया। इस काल के बाद स्मृति काल प्रारंभ होता है इस काल में आचार-व्यवहार और दण्ड संबंधी जो भी परम्पराएं समाज में प्रचलित थी जो कि समाज के लिए उपयोगी समझी जाती थी उन्हें भावी पीढ़ी के लिए स्मृतिकारों द्वारा स्मृति ग्रंथों के रुप में लेख बद्ध किया गया। इसीलिए उन ग्रंथों को स्मृति का नाम दिया गया। उस युग में जो भी लिखित सामग्री थी वह व्यक्तिगत होती थी। इस युग में ग्रंथ एवं ग्रंथालय की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि के अध्ययन से ज्ञात होता है कि तब विविध रुपों में ज्ञान का वर्गीकरण किया गया था जैसे वेद, वेदांत और स्मृतियां, वैदिक और लौकिक साहित्य (पाणिनि ईसा. पूर्व 6 वीं सदी), धर्म काम और मोक्ष (पुराण-ईसा पूर्व) निगम और आगम (अर्थात वेद और तंत्र एवं मंत्रशास्त्र)। ईसा पूर्व काल में यहां सिन्धु और ब्राम्ही और खरोष्ठी लिपि का निर्माण हुआ था, बाद में ब्राम्ही लिपि से ही आधुनिक भारतीय लिपि का उद्भव और विकास हुआ। ईसा पूर्व 3 री सदी में 'ललित विस्टर' नामक ग्रंथ में 64 लिपियों का उल्लेख है। लेखन सामग्री के रुप में पत्थर, धातु, चर्म पत्र, ताड़पत्र, भोजपत्र, रेशम का कपड़ा, नड़, बांस और लोहे की कलम (शलाका) का प्रचीन ग्रंथों में उल्लेख मिलता है।

प्राचीन भारत में जितने भी ग्रंथालय थे सब हस्तलिखित थे तथा व्यक्तिगत था संस्थाओं से संबंध होते थे। मठ, मंदिर, बौद्ध विहार, जैनों का उपसाय और राज प्रसादों में पुस्तकालय रहते थे।

ईसा पूर्व चौथी सदी में आधुनिक पेशावर (पाकिस्तान) के तक्षशिला में एक विश्व विद्यालय था। जहां एक विशाल ग्रंथालय था। नालंदा (4 थी से 12 वीं सदी), वल्लभी (559 ई.),विक्रम शिला (8 वीं सदी), पहाड़पुरी (सोमपुरी) (11 वीं सदी) और जग्गदल (उ. बंगाल 11 वीं और 12 वीं सदी) बौद्धों का बहुत बड़ा शिक्षा केन्द्र था। पांचो स्थान पर विश्वविद्यालय और उनमे संबद्ध विशाल पुस्तकालय थे। नालंदा विश्व विद्यालय का ग्रंथालय का नाम धर्म-गंज था। उनमें तीन बड़े विभाग थे जिनके नाम रत्नसागर, रत्नोदधि और रत्नरजक थे, रत्नोदधि के नौ उपखण्ड व 300 अध्ययन कक्ष थे, पुस्तके विषयानुसार जमी होती थी, एक प्रमुख ग्रंथालयों व प्रत्येक विभाग में एक प्रभारी होता था, इस पुस्तकालय को पहले हूणों के सरदार मिहिल कुल और बाद में 1205 ई. में बख्तियार खिलजी ने आक्रमण कर लगभग नष्ट कर दिया। इसी प्रकार वल्लभी के पुस्तकालय की स्थापना राजकुमारी दक्षा ने की थी। विविध विषयों की पुस्तकें यहां संग्रहित थी। आठवीं सदी में मगध के राजा धर्मपाल ने विक्रम शीला में मठ और उससे संबद्ध पुस्तकालय की स्थापना की। यहां हिन्दू धर्म से संबंधित ग्रंथ भी थे। 12 वीं सदी में यहां 8 हजार बौद्ध भिक्षु और विद्यार्थी रहते थे। वारेन्द्र भूमि में जगदल, बिहार शरीफ में ओदन्तपुरी तथा पहाड़पुर में सोमपुरी

शिक्षा के बड़े केन्द्र थे जिससे संबद्ध विशाल पुस्तकालय स्थापित थे। यहां हिन्दू और बौद्ध से संबंधित ग्रंथ उपलब्ध थे। इनके अलावा 4 थीं से 12 वीं सदी तक कश्मीर और जैतवाना (जयेन्द्रमठ पंजाब में चिनापति तथा जालंधर मठ), आंध्रप्रदेश में हरीयान तथा अमरावती मठ, कान्हेरी (पश्चिम भारत) और काम रुप (आसाम) आदि शिक्षा के बड़े केन्द्र थे जहां विशाल ग्रंथालय स्थापित थे। 5 वीं सदी से जैन पुस्तकालय का अस्तित्व सामने आता है उनका विकास मध्य काल में अधिक हुआ इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्राचीन भारत में बौद्ध व जैन धर्म से संबंधित ग्रंथों ने पुस्तकलय को मूर्त रुप प्रदान किया।

3.132 मध्य युग और पुस्तकालय

इतिहासकारों ने पुस्तकालय के उद्भव व विकास में वर्षों का कोई निश्चित विभाजन नहीं किया है, जिससे प्राचीन युग के पुस्तकालयों के अस्तित्व की समाप्ति एवं मध्य युग के पुस्तकालयों के प्रारंभ को समझा जा सके अत: जो नवीन प्रकार के पुस्तकालय के लक्षण को निश्चित करते हैं और इसके विकास को दिखाते हैं उसे ही मध्य काल का प्रारंभ माना जा सकता है। प्राचीन काल में पुस्तकालय व्यक्तिगत, शासकीय एवं धार्मिक या मंदिरों, मठों से संबद्ध होते थे वहीं मध्य युग में व्यक्तिगत,शासकीय संस्थान एवं मठों से संबद्ध होते थे। इटली में कसिडोरस (6 वीं सदी) एवं सोवियो (7 वीं सदी) ने मठों में पुस्तकालय की स्थापना की। फ्रांस में सेण्ट कोलवेन (6 वीं सदी), जर्मनी में सेंट बोनीफस ने अनेक मठ एवं उससे संबद्ध पुस्तकालयों की स्थापना की। चीन में 700 ई. में लकड़ी के ब्लाक से मुद्रण होने लगा एवं ई.सन 868 तक पुस्तकें छपने लगी। ब्रिटेन में पहली बार सन् 731 ई. में Ecelesiastiac History नाम से पहली बार वर्गीकृत ग्रंथ सूची तैयार हुई। पैगम्बर मुहम्मद (6 वीं सदी) के उदय के बाद अरब एवं तुर्की में सांस्कृतिक जागरण शुरु हुआ। ये इस्लाम के प्रचार के लिए ग्रंथों का संग्रह कर पुस्तकालयों की स्थापना करने लगे। ये चीन से कागज बनाने की कला सीखकर समाकंद एवं बगदाद में कागज बनाने लगे जिससे ग्रंथों की संख्या बढ़ने लगी एवं उसके रख-रखाव हेतु पुस्तकालय निर्मित होने लगे जिसके लिए पुस्तकालय कर्मचारी नियुक्त किये जाने लगे। यहां ग्रंथों की सूचियां भी तैयार की जाती थी। 830 में Abasid ने अल-ममम नामक एक संस्था स्थापित की, जिससे संबद्ध पुस्तकालय में चिकित्सा शास्त्र, गणित एवं प्राकृतिक विज्ञान से संबंधित ग्रंथ थे। यह संस्था शिक्षा केन्द्र के रुप में थी। 11 वीं सदी में कैरा के खलीफा के पुस्तकालय में लगभग डेढ़ लाख पुस्तकें उपलब्ध थी। दसवीं सदी में स्पेन के कोर्डोवा स्थित विश्व विद्यालय शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र था जहां एक अच्छा पुस्तकालय था।

मध्य युग के अंतिम दौर में शिक्षा के बड़े-बड़े केन्द्र स्थापित होने लगे थे। इस युग में विशेषत: तीन प्रकार के पुस्तकालय दृष्टि गोचर होते हैं धनी के व्यक्तिगत पुस्तकालय, विश्वविद्यालय पुस्तकालय एवं चर्च से संबंद्ध पुस्तकालय। Bugandy के ड्यूक (1396-1462) का व्यक्तिगत पुस्तकालय बहुत संगठित था जहां प्रतिलिपिकार, अनुवादक एवं चित्रकार रहते थे। चर्च के पुस्तकालयों में रोम का बेटिकन पुस्तकालय उल्लेखनीय है पोप निकोलस (1443-1455) ने इस पुस्तकालय के विकास में भरपूर योगदान दिया। सन् 1500 तक इस पुस्तकालय में 1000 से अधिक पुस्तकें थी। जर्मनी में 12 वीं सदी

में शिक्षा के प्रति लोग जागरुक थे, लेटिन, स्थानीय भाषा और अन्य शिक्षा के विषय थे। यूरोप में अच्छे शैक्षणिक वातावरण ने विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए एक अच्छा माहौल बनाया, पुस्तकालय **Bolegna Prague, Peris, (1366) Heidelberg (1386) Oxford (1412) Cambridge (1425)** विश्वविद्यालय स्थापित हुए। ये विश्व विद्यालय शिक्षा के उच्च केन्द्र थे जहाँ शिक्षकों का संगठित समुदाय था, जो यहाँ के सफल शिक्षार्थियों को उपाधि प्रदान करने हेतु चर्च या शासन से अधिकृत थे, इस प्रकार पुस्तक एवं पुस्तकालय अब विश्वविद्यालय से संबंद्ध होने लगे।

यूरोप में मध्य काल में ग्रंथ चर्मपत्र की पाण्डुलिपि होती थी जिन्हें पेटियों या आलमारियों में रखा जाता था। पेटियों को लोहे के खम्बों में चैन से बांध देते थे ताकि वह सुरक्षित रहे। उत्तर मध्य काल में ग्रंथ डेस्क या गैलरियों में रखे जाते थे। डेस्क पर भी सभी प्रमुख ग्रंथ चैन से बंधे होते थे। ग्रंथ विषयवार पंजीकृत होती थी । विभाजन हेतु रंग या अक्षरों का उपयोग किया जाता था।

पश्चिमी देशों के साथ -साथ पूर्वी देशों यथा चीन, भारत में भी पुस्तकालय का विकास इस युग में हुआ। चीन में पूरे मध्य युग में राजवंश का राज्य था। टैंग (618-967) ग्रंथ एवं पुस्तकालय प्रेमी थे, सुंग (960 से 1259) के काल में अनेक विश्व कोष और बहुखण्डात्मक तथा अभिटिष्ण ग्रंथ सूची का निर्माण हुआ। मिंग (1368-1643) के काल में सारका की रचना की गई थी इस समय अनेक शासकीय एवं व्यक्तिगत पुस्तकालय स्थापित हुए।

भारत में राजनैतिक इतिहास का मध्यकाल 7वीं सदी से माना जाता है इस काल में महाराजा हर्षवर्धन पुस्तक एवं पुस्तकालय के प्रेमी थे। वाणभट्ट का अपना एक व्यक्तिगत पुस्तकालय था। मालवाधार में भोज (10वीं सदी) और परमार वंश के अनेक शासक ग्रंथालयों के प्रति व्यक्तिगत रुचि रखते थे। सिध्दराज, जयसिंह और कुमार पाल ने जैन पुस्तकालयों की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 10वीं सदी में कॉची एक प्रमुख विद्या केन्द्र था जहाँ राजाओं ने हस्तलिखित ग्रंथों की स्थापना की। राजेन्द्र चोल (1012-1044) प्रथम के राज्य के दौरान जिल्दबंदी का कार्य होता था। चालुक्य राजा (1058ई) के समय नेगे नामक स्थान पर एक प्रमुख शिक्षा संस्थान था जहाँ एक सम्पन्न पुस्तकालय था। पश्चिम भारत के चालुक्य राजा विशाल देव का एक संगठित पुस्तकालय था। राजा बुक्क (1406) ने श्रृंगेरी मठ से संबध्द पुस्तकालय को अच्छी तरह से संगठित करने हेतु कुछ गांव कृष्ण भट्ट नामक ब्राम्हण को दिये थे। नीलकंठ नायक (13वीं सदी) ने श्री रंग पट्टनम के रंगनाथ मंदिर में पुस्तकालय की स्थापना की। शंकर (8वीं सदी), रामानुज (10 वीं सदी) तथा मध्व (12वीं सदी) ने अपने दार्शनिक सिध्दांतों के माध्यम से भारतीय संस्कृति, वेद एवं शास्त्रों के संरक्षण तथा प्रचार की दिशा में कार्य किया। ग्रंथ संग्रहों तथा पुस्तकालयों के माध्यम से उनका प्रचार, संरक्षण एवं विकास किया।

12वीं सदी से 15वीं सदी के मध्य मिथिला शिक्षा का एक बहुत बड़ा केन्द्र था। जहाँ न्याय, मीमांसा और धर्मशास्त्र से संबंधित हस्तलिखित ग्रंथों का एक बहुत बड़ा संग्रह था वहां के शिक्षकों, पंडितों के पास उक्त ग्रंथों का व्यक्तिगत संग्रह था ये संग्रह ही वहाँ के पुस्तकालय थे। नत्यन्याय के प्रवर्तक

गंगेश उपाध्याय के ग्रंथ 'तत्व चिन्तामणी' पर अनेक मौलिक क्रोडपत्र (विशिष्ट टीका) लिखे गये थे।

भारत के पूर्व में नदिया (नवदीप) 11वीं /12वीं सदी में शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था। गौड़ राजा लक्ष्मण सेन का (1063-1106 ई.) ग्रंथ एवं ग्रंथालयों के प्रति विशेष लगाव था। 15 वीं सदी में वासुदेव सार्वभौम और उनके शिष्य रघुनाथ शिरोमणी ने नत्य न्याय का एक पीठ स्थापित किया। 15वीं-18वीं सदी तक यहाँ अनेक प्राचीन ग्रंथों की प्रतियाँ तैयार की गई अनेक नये ग्रंथ लिखे गए और उनके संग्रह को सुरक्षित रखा गया।

मध्यकालीन विदेशी शासकों ने हिन्दु,जैन एवं बौध्द धर्म के अनेक पुस्तकालयों को नष्ट कर दिया। पर उनमें से अनेक शासकों ने अपनी संस्कृति एवं धर्म के प्रचार हेतु राजकीय एवं व्यक्तिगत पुस्तकालय स्थापित किए। जलालुद्दीन खिलजी (1290-1296 ई.) ने दिल्ली में एक शासकीय पुस्तकालय की स्थापना की, जिसमें अमीर खुसरो पुस्तकालय अध्यक्ष थे। मुगल बादशाह ग्रंथालयों के प्रेमी थे एवं इन्होने व्यक्तिगत, राजकीय एवं सार्वजनिक संगठित पुस्तकालय स्थापित किए जहाँ अरबी एवं फारसी में विविध शास्त्रों के अनेक ग्रंथ थे। बाबर का एक शाही ग्रंथालय था, उनकी पुत्री गुलबदन बेगम का अपना एक संगठित पुस्तकालय था। हूमायूं ने आगरा में 'खान -ई-सदत' नामक भवन में अपना निजी पुस्तकालय रखा था। अकबर ने अनेक संस्कृत ग्रंथों का फारसी में अनुवाद कराया इनके काल में भी तीनों प्रकार के (व्यक्तिगत, राजकीय एवं सार्वजनिक) पुस्तकालय थे। पुस्तकालय में पुरुष कर्मचारी थे जो कि ग्रंथों को विषयानुसार सूची बनाकर संयोजित रखते थे। इनके अलावा मुहम्मद तुगलक, फिरोज शाह, सुल्तान सिकन्दरलोदी, जहाँगीर, शाहजहाँ ने व्यक्तिगत एवं राजकीय पुस्तकालय स्थापित किये थे । मुगलकालीन पुस्तकालय भवन वास्तु कला दृष्टि से उच्च कोटि के होते थे। ग्रंथ ताड़पत्र एवं चर्म पत्र के रुप में होते थे। बीजापुर, गोलकुण्डा,बंगाल, गुजरात, अवध में भी तत्कालीन मुगल शासकों ने पुस्तकालय स्थापित किये थे।

मुगल काल में हिन्दु शासकों में जयपुर के राजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने संस्कृत के अनेक ग्रंथों का संरक्षण किया एवं इनकी सुरक्षा हेतु पुस्तकालय स्थापित किये । बीकानेर के राजा अनुप सिंह ने स्वयं कई ग्रंथ लिखे एवं विद्वानों द्वारा लिखित ग्रंथों को सुरक्षित रखने के लिए पुस्तकालय स्थापित किया, जो कि आज तक अनूप संस्कृत पुस्तकालय के नाम से प्रसिद्ध है। मैसूर के राजा (1672-1704 ई.) चित्रदेव राय के द्वारा स्थापित समृध्द (संस्कृत ग्रंथों का संग्रह) पुस्तकालय को टीपू सुल्तान (17 49-1789) ने नष्ट कर दिया था परन्तु इन्होंने अपना स्वतंत्र पुस्तकालय स्थापित किया। इनके पुस्तकालय में अरबी, फारसी व हिन्दी में लिखे इस्लामी शास्त्रों पर करीब 2000 पुस्तकें थी। तेलुगू राजाओं ने तंजावूर में पुस्तकालय स्थापित किया जिसे मराठा राजा सरभोजी (18वीं सदी) ने समृद्ध किया। इसके पुस्तकालय भवन का नाम 'सरस्वती महल' था उसमें संस्कृत, तेलुगू, मराठी, तमिल, फ्रेंच, अंग्रेजी, जर्मन, ग्रीक एवं लेटिन में लिखे अनेक ग्रंथ हैं। डॉ0 बर्नेल के अनुसार यह पुस्तकालय तत्कालीन समय का सर्व श्रेष्ठ और संगठित पुस्तकालय था। डाँ0 बर्नेल ने सर्व प्रथम 1878-80 में और बाद में पी0पी0एस0 शास्त्री ने इस पुस्तकालय के अनेक ग्रंथों का अनेक खण्डों में विवरणात्मक सूची तैयार की। 35 हजार से अधिक प्राचीन हस्तलिखित ग्रं थ यहाँ संग्रहित है एवं यह भारत के साम्प्रतिक हस्तलिखित ग्रंथालयों में प्रमुख

स्थान रखता है। मुर्शिदाबाद के नवाब व ईस्ट इंडिया कम्पनी के अनुरोध पर नादिया के पंडितों ने पंचांग (आलमेनक) बनाना प्रांरभ किया इस तरह यहाँ के पुस्तकालय में सैकड़ों वर्ष के पंचांग बने एवं संग्रहित हैं।

मध्य काल में उपरोक्त चरण पुस्तकालय के विकास को दर्शाते हैं। इनके अलावा यूरोप में पुस्तकालय जगत में निम्न घटनाएँ हुई जो पुस्तकालय के संगठन एवं विकास संबंधी आधुनिक पद्धति और प्रक्रिया का निर्माण प्रांरभ करती है -

1. कैण्स बरी स्थित क्रेस्ट चर्च पुस्तकालय में सन् 1170 से ग्रंथ घर ले जाने हेतु एक आदान-प्रदान प्रणाली अपनाई गई।
2. सन् 1266 में रोजर बेकन 1498 में ऐल्डस मैनुटियस ने एवं 1548 में कोनरड़ जैक्सर ने ज्ञान के वर्गीकरण की प्रणाली निर्मित थी।
3. सन् 1389 में **St.Mortnis Prory.** और 1394 में **Dover** और **Leicester Abbey** ने काल नं. (क्रायक संख्या) के अनुसार संयोजित ग्रंथ सूची, विषय तथा लेखक सूची बनाई ।
4. **Bath** (इंग्लैण्ड) में 1402 में सर्कुलेटिंग एवं रेण्टल लाइब्रेरी (परिचालन एवं किराया-पुस्तकालय) की स्थापना की गई।
5. **John Bosten of Burry** में **catalogus criptorum Eadesiae** नाम से ग्रंथ गत विवरणों के साथ एक संघ सूची तैयार की गई।
6. 1564 में जर्मनी में फ्रंकफर्ट पुस्तक मेले में एक व्यापारिक सूची बनाकर प्रदर्शन के लिए रखा गया।
7. इटली में 1436 में एवं इग्लैंड में 1425 में जन पुस्तकालय स्थापित किए गए। लंदन निवासी रिचर्ड वाशिंगटन ने ब्रिटेन में सर्व प्रथम सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना की।
8. फ्रांस में 1537 से यहाँ प्रकाशित प्रत्येक पुस्तक की एक प्रति राजकीय पुस्तकालय में जमा करना आवश्यक कर दिया गया।
9. 1560 में सर्व प्रथम पुस्तकालय के संगठन एवं प्रकाशन पर पुस्तके प्रकाशित हुई।
10. 1564 में **Grude de la croimaine** ने सूची के नियम प्रकाशित किए।

3.133 आधुनिक युग और पुस्तकालय

पुस्तकालयों के इतिहास का आधुनिक युग 17सदी से माना जाता है । इस नव निर्माण काल का प्रभाव युगान्तर कारी सिध्द हुए। इस समय अनेक मध्य कालीन पुस्तकालयों का अस्तित्व समाप्त हो गया तथा अन्य प्रकार के पुस्तकालयों का जन्म हुआ मठों तथा धार्मिक संस्थाओं के समाप्त होने के साथ-साथ वहाँ किए गए पुस्तकों के संग्रह भी नष्ट होते चले गए। वहीं मानवतावाद, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं शैक्षणिक जागरण के प्रभाव से आधुनिक विज्ञान और अन्य विषयों का उद्‌भव और विकास होने लगा, तब विद्वानों और शिक्षित वर्ग में पुस्तकालयों के प्रति झुकाव बढ़ा और

उसके सार्वजनिक उपयोग हेतु खोले जाने पर जोर दिया जाने लगा। इन सब घटनाओं के फलस्वरुप सर्व प्रथम आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से संबध्द बोडिल एन पुस्तकालय, जो कि अर्ध व्यक्तिगत ग्रंथालय था को सन् 1602 में समाप्त कर लोगों के लिए खोल दिया गया।

इस युग में हम पुस्तकालयों के विकास का अध्ययन करने पर पाते हैं कि जर्मनी,इटली,फ्रांस,अमेरिका, ब्रिटेन आदि देशों में पुस्तकालय के महत्व को समझा जाने लगा था और उसे आधुनिक स्वरुप प्रदान कर उसके विकास एवं सार्वजनिक उपयोग हेतु व्यवस्थित किया जाने लगा था। इस तारतम्य में राजकीय,राष्ट्रीय एवं शैक्षणिक पुस्तकालयों की स्थापना एवं मध्य कालीन पुस्तकालयों का पुन: संगठन किया गया। 1692 में फ्रांस में **Bibliotheque Nationale** को सार्वजनिक कर दिया गया। इटली में 1614 में रोम स्थित **Bibliotheca Angalica** को सबके उपयोग के लिए खोल दिया गया। जर्मनी के राजकीय एवं प्रान्तीय पुस्तकालयों में ग्रंथालयी नियुक्त किए गए। आधुनिक युग के महान ग्रंथालयी गैब्रीनौडे थे जिनका मानना था कि पुस्तकालय में ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र से संबंधित पुस्तकें उपलब्ध हों। इनके पुस्तकालय की व्याख्या तथा वास्तुकला पर **advice to the formation of a library** नाम की पुस्तक 1627 में, ज्ञान के वर्गीकरण पर 1643 में पुस्तकें प्रकाशित हुई। ब्रिटेन में इस सदी में आक्सफोर्ड एवं कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से संबध्द संगठित पुस्तकालय विद्वानों एवं शिक्षार्थीयों के सार्वजनिक उपयोग हेतु थे। ब्रिटेन में प्रमुखत: तीन प्रकार के पुस्तकालय इस युग में थे। प्रथम संस्थागत पुस्तकालय जो कि चर्च से संबंधित होते थे। व्दितीय धर्मादृय (एण्डावड) से स्थापित पुस्तकालय सन् 1800 तक वहाँ ऐसे 200 पुस्तकालय थे जो कि गाँवो में स्थापित थे। एवं पादरियों के अलावा अन्य लोगों के लिए भी खुले रहते थे। तृतीय (अभिठधान, सब्स्क्रिप्शन) पुस्तकालय - इस प्रकार के पुस्तकालय व्यवसायिक एवं व्यापारी लोगो की मांग को पूरा करने के लिए खोले गए थे। जहाँ वार्षिक चंदा लेकर पुस्तकें घर ले जाने के लिए दिए जाते थे। जिसे वे अवकाश के क्षणों में पढ़ते थे।

सन् 1680 में एडिनबर्ग के वकीलों के लिए राष्ट्रीय पुस्तकालय स्कॉटलैंड में खोला गया जिसे 1925 में सार्वजनिक घोषित किया गया था इस तरह हम पाते हैं कि 19 सदी तक आते-आते ब्रिटेन की जनता पुस्तकालय की आवश्यकता से अच्छी तरह परिचित हो गई थी, एवं उसका उपयोग अपने बौध्दिक विकास तथा मनोरंजन हेतु करने लगी थी।

अमेरिका में भी ब्रिटेन की तरह पुस्तकालयों के सार्वजनिक महत्व को तीव्रता से महसूस किया जाने लगा था। ईसाई धर्म गुरुओं ने ईश्वर के संदेश को सार्वजनिक करने के लिए धार्मिक पुस्तकालय की स्थापना करना आरंभ किया। इस प्रकार धार्मिक प्रभाव ने वहाँ सार्वजनिक पुस्तकालय को जन्म दिया। जनता के हर प्रकार की बौध्दिक आवश्यकताओं को पुरा करने हेतु वहाँ विविध प्रकार के ग्रंथ संग्रहित किये जाने लगे। धीरे-धीरे वहाँ सब्स्क्रिप्शन एवं सोसाइटी पुस्तकालयों की स्थापना होने लगी। सन् 1731 में सर्व प्रथम फिलेडेल्फिया में पुस्तकालय कम्पनी के रुप में एक शुल्क पुस्तकालय

खोला गया, अगले दो सौ वर्षों में वहाँ अनेक पुस्तकालय स्थापित हुए जिनमें बोस्टन, अथेनियम, न्यूयार्क सोसायटी तथा चार्लेस्टन पुस्तकालय प्रमुख हैं।

भारत में मुसलमानी शासन के अंत और अंग्रेजों के आगमन के बीच के समय को पुस्तकालय विकास की दृष्टि से अप्रगतिशील कहा जा सकता है। फिर अंग्रेजों ने अपने धर्म प्रचार और शिक्षा की ओर ज्यादा ध्यान दिया। ईसाई मिशनरी के फादर का आगरा एवं मोगोर में अपना व्यक्तिगत पुस्तकालय था, जहाँ यूरोपीय भाषाओं के अतिरिक्त अन्य भाषाओं के ग्रंथ भी संग्रहित थे। 17 वीं सदी में कैप्टन विलियम व्हाईटफील्ड ने मद्रास के अंग्रेजी कालोनी में एक पुस्तकालय स्थापित किया। जहां बाद में फोडेसेंट जार्ज ने ईस्ट इंडिया कम्पनी का प्रथम ग्रंथालय स्थापित किया। कम्पनी ने हुगली और मुबंई स्थित अपने कार्यालय में पुस्तकालयों की स्थापना की। तत्पश्चात् कम्पनी ने अपने राजनैतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सन् 1681 में कलकत्ता मदरसा , सन् 1791 में बनारस संस्कृत कालेज तथा सन् 1800 में फोर्ट विलियम कालेज एवं उससे संबध्द पुस्तकालय की स्थापना की, जो धीरे-धीरे महत्वपूर्ण पुस्तकालय बन गए।

सन् 1774 में सर विलियम जोन्स एवं अंग्रेज विद्वान व्यक्तियों के प्रयास से खोला गया एशियाटिक सोसायटी और उससे संबध्द पुस्तकालय महत्वपूर्ण था। एशिया के पुरातत्व,कला, विज्ञान और साहित्य की खोज करना इस संस्था का प्रमुख उद्देश्य था। भारतीय विद्या के प्रचार -प्रसार , हस्त लिखित ग्रंथों के संग्रह एवं संरक्षण में उस संस्था का विशेष स्थान है। इसमें 20 हजार से अधिक प्राचीन हस्त लिखित ग्रंथ है। जिनमें 9,10 और 11वीं सदी के ग्रंथ देखे जा सकते है।

ज्ञान सार्वजनिक है और उपलब्ध समस्त ज्ञान बिना किसी भेद-भाव के समस्त लोगों को मिलना चाहिए इस विचार -धारा के आने पर स्वतंत्र एवं प्रबुद्ध देशों में प्रजातंत्र की बुनियाद शिक्षा को सार्वजनिक कर दिया गया। और उसके विकासपरक तत्व ग्रंथालय को भी धीरे-धीरे सार्वजनिक घोषित कर दिया गया। इस प्रकार 19वीं सदी में आधुनिक ग्रंथालय का उदय होता है।

आधुनिक पुस्तकालय को मूर्तरुप देने में उसे प्रोत्साहित और प्रेरणा देने की दिशा में ब्रिटेन एवं अमेरिका का प्रयत्न उल्लेखनीय है। ब्रिटेन में 19 वीं सदी के पूर्वार्द्ध से ही जन पुस्तकालय आन्दोलन एवं पुस्तकालय कला का आरंभ होता हैं। पहले वहाँ पुस्तकालय धनी एवं मध्यम वर्ग तक ही सीमित थी। पर सन् 1800 में दर्शन के शिक्षक जार्ज बरबेक ने स्काटलैंड में कारीगरों को प्रशिक्षित करने के लिए एक मैकेनिक इंस्टीट्यूट खोला जहाँ एक पुस्तकालय भी था, इस प्रकार वहाँ गरीब और साधारण लोगों के मध्य पढ़ने-लिखने में रुचि जागृत होने लगी। इस संस्था का अनुसरण सारे देश में किया जाने लगा। 1810 में स्काटलैंड में चल पुस्तकालय प्रारंभ हुआ। 1827 में हार्न की सूची करण संहिता तथा वर्गीकरण पद्धति कैम्ब्रिज में प्रकाशित हुई। 1832 में ब्रिटेन एवं फ्रांस के मध्य पुस्तकों का विनियम प्रारंभ हुआ जिसने पुस्तकालय सहयोग को मूर्त रुप प्रदान किया। सन् 1837 में सर एण्टीनियों पैनोजी को ब्रिटिश म्यूजियम के मुद्रित विभाग में कीपर के रुप में नियुक्त किया गया यही पर 1842 में पैनोजी ने

उपलब्ध पुस्तकों को व्यवस्थित रुप से सूचीबद्ध करने के लिए सूची करण के नियम बनाए।

सन् 1835 में ब्रिटिश म्यूजियम (पुस्तकालय) में सुधार करने हेतु संसदीय समिति का गठन किया गया। वहीं 1845 में संसद में एक कानून पारित कर उपनगरीय परिषदों को सार्वजनिक संग्रहालय स्थापित करने के लिए कर लगाने का अधिकार प्रदान किया गया। सन् 1850 में ब्रिटिश संसद ने 10,000 से अधिक जनसंख्या वाले ग्रामों में सार्वजनिक पुस्तकालय स्थापित किया। सन् 1877 में पुस्तकालय संघ की स्थापना, 1886 में साम्राज्ञी विक्टोरिया का जयंती वर्ष अधिक पुस्तकालयों की स्थापना करके मनाना आदि ऐसे कार्य थे जो पुस्तकालयों की महत्ता प्रदर्शित करते थे।

ग्रेट ब्रिटेन अपनी राष्ट्र व्यापी सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली के प्रसार के एक महत्वपूर्ण स्वरुप में अमेरिका से आगे रहा है। जहाँ अमेरिका के विभिन्न राज्यों के स्थानीय पुस्तकालय इकाई के लिए पुस्तकालय कानून में पर्याप्त विभिन्नता है। वही पर ग्रेट ब्रिटेन में प्रांरभ से ही संसद सम्पूर्ण देश के लिए कानून पारित करता रहा है। इसके फलस्वरुप प्रांरभ से ही वहाँ अधिक एकरूपता रही है। ग्रेट ब्रिटेन में प्रथम विश्व युद्ध के बाद आर्थिक पुर्ननिर्माण के व्यापक उपायों में सन् 1918 का पुस्तकालय अधिनियम भी था। जिनमे उस समय तक पुस्तकालय करा रोपण की सीमा को समाप्त कर दिया गया और देश में पुस्तकालय प्राधिकारो का निर्माण किया। जर्मनी के मुक्ति संग्राम (1813-15) के व्यापक सामाजिक क्रांति के फलस्वरुप कारीगर व शैक्षणिक संघों ने सार्वजनिक उपयोग हेतु अनेक छोटे व चल पुस्तकालयों की व्यवस्था की। 1841 में इतिहासकार फ्रेण्डरिच के वैज्ञानिक व्याख्यान आयोजित करने के लिए स्थापित संघ ने 1850 में चार लोकप्रिय ग्रंथालय स्थापित किये। 1907 में बर्लिन ने एक केन्द्रीय पुस्तकालय स्थापित किया एवं बर्लिन के प्रशासनिक जिलों में स्थापित 130 पुस्तकालयों का नियंत्रण इस केन्द्रीय पुस्तकालय को दे दिया। 19 वीं सदी में यूरोप के पूर्वोत्तर देशों की तुलना में फ्रांस, इटली और रुस में पुस्तकालय अविकसित थे, इसी सदी से ही वहाँ पुस्तकालय आन्दोलन का जन्म और विकास तेजी के साथ हुआ।

भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासकों ने कलकत्ता में एशियाटिक सोसाइटी और उसका पुस्तकालय (1774) तथा बाम्बें में रायल एशियाटिक सोसाइटी (1804) की स्थापना की। 1783 में लंदन में इण्डिया आफिस लाइब्रेरी की स्थापना कर असंख्य भारतीय ग्रंथ तथा अन्य ऐतिहासिक महत्व के साहित्य वहाँ ले जाकर जमा किए जाने लगा। भारत में स्थानीय लोगों को आधुनिक वातावरण में शिक्षा देने के लिए कम्पनी ने वाराणसी संस्कृत कॉलेज (1791), कलकत्ता में फोर्ड विलियम कॉलेज (1800), ओरिएन्टल सेमेनरी (1823) और संस्कृत काँलेज (1824) की स्थापना किए। जिससे संबध्द समृध्द पुस्तकालय थे। उच्च शिक्षा हेतु 1816 में कलकत्ता में स्थापित हिन्द कालेज से संबध्द पुस्तकालय , समस्त उपलब्ध पुस्तकालयों से अधिक समृद्ध व सर्वोत्तम था। मद्रास में 1812 में स्थापित लिट्टरी सोसाइटी से जुड़ा पुस्तकालय था। 1812 में कलकत्ता में एक जन पुस्तकालय (पिपुल्स लाइब्रेरी) की स्थापना की गई। भारतीय विद्या प्रेमी कर्नल मैकेजी, बहुभाषी डॉ0 लिडम जोन्स और सी0पी0 जैन द्वारा संग्रहित ग्रंथ एवं दान,क्रय से प्राप्त हस्त लिखित ग्रंथों की सुरक्षा हेतु मद्रास सरकार ने 1828 में गवर्नमेन्ट

ओरिएन्टल मेनुस्कृप्ट्स लाइब्रेरी मद्रास की स्थापना की। 1870 में यह पुस्तकालय मद्रास प्रेसीडेंसी कालेज में स्थित कर संगठित किया गया और अब यह मद्रास विश्वविद्यालय भवन में स्वतंत्र रुप से स्थापित है। यहाँ पर 50 हजार से अधिक हस्त लिखित ग्रंथ उपलब्ध हैं। आधुनिक जन पुस्तकालय के रुप में 1835 में कलकत्ता पब्लिक लाइब्रेरी का जन्म होता है, 1848 तक यहाँ 20 हजार ग्रंथ संग्रहित थे। 1890 में कलकत्ता नगर पालिका द्वारा इसका प्रबंध किया जाने लगा। 1886 में अड्यार ग्रंथालय मद्रास की स्थापना की गई , यहां पर 20 हजार से अधिक हस्तलिखित ग्रंथों का महत्वपूर्ण संग्रह है। इसी तरह 1891 में महाराजा चामराज ओडियार ने मैसूर प्राच्य विद्या ग्रंथालय की स्थापना की।

20वीं सदी के प्रारंभ में भारत में अंग्रेजों का शासन अपनी चरम सीमा में था। परन्तु उस समय भारत में पुस्तकालय की स्थिति बहुत खराब नही थी। 1891 में खुदाबख्श ग्रंथालय पटना, 1924 में सिन्हा पुस्तकालय, 1936 में हिन्दी प्रयाग पुस्तकालय की स्थापना हुई। इण्डिया आफिस लाइब्रेरी में लगभग 95 भाषाओं की पुस्तकें, हस्तलिखित ग्रंथ, चित्रकला, फोटो एवं अन्य वस्तुएं हैं। प्रेस सुविधा उपलब्ध होने पर भारत में समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं भी छपने लगी। समाचार दर्पण 1818 प्रथम बंगाली पत्रिका एवं 1839 में प्रथम बंगाली दैनिक अखबार संवत् अवकर 1839 में निकली । उत्तर प्रदेश में 'शिक्षा प्रसार विभाग' खोला गया, जिसके अन्तर्गत गावों में पुस्तकालय व वाचनालय खोले गए। बंबई में 1939-40 में पुस्तकालय विकास समिति श्री ए0ए0ए0 फैजी की अध्यक्षता में बनी, जिनके रिपोर्ट के आधार पर पुस्तकालय के विकास हेतु कार्य किए गए।

1869 में डिलवरी आफ बुक एक्ट बनाया गया था जिसके तहत् प्रकाशक को इंपीरियल लाईब्रेरी में अपने प्रकाशन की एक प्रति नि:शुल्क आवश्यक रुप से भेजने की व्यवस्था की गई थी। 1928 में श्री नरसिंह स्वामी व इबाकी वेंकट रमैया के प्रयास से एक 'ऑल इंडिया पब्लिक लाइब्रेरी' एशोसियशन बना परन्तु इसने कुछ वर्षो बाद कार्य करना बंद कर दिया। तत्पश्चात 1933 में 'ऑल इंडिया लाइब्रेरी एसोशियेशन' कलकत्ता स्थापित हुआ।

स्वतंत्रता के पश्चात भारत के केन्द्रीय शिक्षा विभाग ने पूरे देश में पुस्तकालय की जो बातें सोची उसकी रुपरेखा निम्नलिखित है -

- ब्रिटिश काल में स्थापित इम्पीरियल लाइब्रेरी को राष्ट्रीय पुस्तकालय का रुप दिया जाये और उसका विकास किया जाए।
- नेशनल बिब्लियोग्राफी के निर्माण की ओर ध्यान दिया जाए।
- प्रदेशों में सेण्ट्रल स्टेट लाइब्रेरीऔर जिला पुस्तकालय स्थापित किये जायें।
- राजधानी दिल्ली में एक केन्द्रीय पुस्तकालय हो जिसके द्वारा सभी पुस्तकालय को एक सूत्र में गूंथ दिये जायें।
- लाइब्रेरी एडवाइजरी का निर्माण किया जाए।
- जिला पुस्तकालयों द्वारा ग्राम पुस्तकालयों को संगठित किया जाये तथा जनता के बौध्दिक विकास के लिए सम्भावित प्रयास किया जाए।

- केन्द्रीय सरकार ने 'डिलवरी आफ बुक्स एक्ट' के अन्तर्गत 20मई 1954 से प्रत्येक प्रकाशन की एक-एक प्रति राष्ट्रीय पुस्तकालय कलकत्ता, सेल्ट्रल पब्लिक लाइब्रेरी बंबई, कोनेमारा लाईब्रेरी मद्रास को भेजना अनिवार्य कर दिया गया।

- 10 सितम्बर 1955 को कोनेमारा लाइब्रेरी तथा 4 नवंबर 1955 को सेन्ट्रल पब्लिक लाईब्रेरी बंबई को राष्ट्रीय पुस्तकालय घोषित कर दिया गया।

सन् 1956 में भारत के नवगठित प्रांतों के सभी प्रकार के पुस्तकालयों की एक डायरेक्ट्री केन्द्रीय शिक्षण विभाग ने 'लाइब्रेरी इन इंडिया' नाम से प्रकाशित की जिनमें देश के प्रसिद्ध 1166 पुस्तकालयों का विवरण दिया गया है । 1952 में भारत व युनेस्को के सहयोग से दिल्ली में सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना की गई, जो आज देश के श्रेष्ठतम पुस्तकालयों में से एक है व ग्रंथालय सेवा में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। नेशनल बुक ट्रस्ट की स्थापना जनता तक सस्ता व स्वस्थ साहित्य उपलब्ध कराने के तहत की गई।

पुस्तकालय के इतिहास के संक्षिप्त अध्ययन से पता चलता है कि विश्व के समस्त प्राचीन एवं आधुनिक सभ्यताओं में पुस्तकालय का अस्तित्व किसी न किसी रुप में अवश्य विद्यमान था। अत: इसके इतिहास के अध्ययन से यह निश्चित रुप से कहा जा सकता है कि पुस्तकालय के अस्तित्व व महत्व को मानव जाति प्रांरभ से ही मानती चली आ रही है।

3.14 महत्व

ग्रंथालय का क्षेत्र बहुत व्यापक है ज्ञान का क्षेत्र जैसे-जैसे फैलता गया, ग्रंथालय की सीमाओं में भी वृद्धि होती चली गई। आज ग्रंथालय विभिन्न रुपों में समाज के विभिन्न वर्गो को अपनी सेवाएं उपलब्ध कराता है, चूंकि प्रत्येक कार्य और उससे संबंधित ज्ञान के विषय का स्वरुप एवं उद्‌देश्य अन्य से अलग होता है उसके क्रियान्वयन हेतु विशेष प्रकार के कार्यकर्त्ता, उनकी योग्यता तथा आवश्यक अन्य साधन की आवश्यकता होती है। बौद्धिक दृष्टि से इन सबकी व्यवस्था करने और सेवाओं को उत्कृष्ट बनाए रखने की दृष्टि से पुस्तकालयों की आवश्यकता होती है।

ग्रंथालयों के इतिहास के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि पुस्तकालय के महत्व को प्राचीन काल से ही मान्यता मिली हुई थी। हालांकि तब यह व्यक्तिगत उपयोग, राजा महाराजाओं के व्यक्तिगत संग्रहालय के रुप में विद्यमान थी, परन्तु उस की महत्ता को तब भी लोग मानते थे। धीरे-धीरे समाज व राष्ट्रों में जैसे -जैसे बौध्दिक चेतना बढ़ती चली गई वैसे-वैसे यह अनुभव किया जाने लगा कि यदि बिना किसी भेद -भाव के सभी लोगों को पुस्तकालय में संग्रहित सामग्री के उपयोग करने की सुविधा प्राप्त हो तो पुस्तकालय समाज की उन्नति में सफल साधन के रुप में कार्य कर सकते हैं। इस तरह से धीरे-धीरे संग्रहित पाठ्य सामग्री की उपयोग की सुविधा प्रदान की जाने लगी।

व्यक्ति की उन्नति उस की शिक्षा और बौद्धिक सम्पन्नता पर निर्भर करती है। ''शिक्षा का ध्येय व्यक्ति को जीवन के कला पक्ष से परिचित कराना है। तो उसे प्रकृति, समाज और मुल्यों के स्वरुप से अवगत कराना आवश्यक है। इसीलिए प्रत्येक प्रकार के अध्ययन से विविध मानसिक शक्तियों को जागृत होना चाहिए जिसके फलस्वरुप छात्र-छात्राओं को बौद्धिक दृष्टि एवं व्यवहारिक योग्यता प्राप्त होती है।'' [1] व्यक्तित्व के विकास का यही भौतिक स्वरुप है। किसी भी व्यक्ति का यह भौतिक रुप व्यवहारिक शिक्षा से प्राप्त नहीं हो सकता, क्योंकि व्यवहारिक शिक्षा एक निश्चित पाठ्य क्रम में बंधा होता है , व शिक्षार्थी उस निश्चित पाठ्यक्रम को ही दृष्टिगत रखते हैं। व्यक्तित्व के विकास में निरंतर अध्ययन और प्रयोग आवश्यक है वास्तव में यह अध्ययन या जिसे हम सेल्फ स्टडी कह सकते हैं , व्यवहारिक शिक्षा की समाप्ति से शुरु होता है और यहीं से व्यक्ति के शिक्षा का वास्तविक क्षेत्र में पदार्पण कहा जा सकता है, दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि व्यवहारिक शिक्षा से बौध्दिक चेतना अधिक जागृत एवं विकसित होती है जो शिक्षार्थी को स्व-अध्ययन के लिए प्रेरित करती है तब कक्षा में बताई गई आधार भूत बातों को व्यापक स्तर पर समझने और उनका प्रयोग करने के लिए छात्र को नियमित रुप से पुस्तकालय जाकर वहाँ संग्रहित पाठ्य सामग्री से अपने रुचि व विषय से संबंधित विविध ग्रंथों का अध्ययन आवश्यक हो जाता है। यदि तब पुस्तकालय के रुप में ऐसी कोई संस्था उपलब्ध न हो तो उस छात्र की जिज्ञासा व ज्ञान पिपासा को अन्य किसी भी जगह संतुष्ट नहीं किया जा सकता है। इस प्रकार स्व-अध्ययन , खोज , शोध से संबधित गहन अध्ययन के लिए एक मात्र जगह पुस्तकालय ही है। इसके अलावा अध्ययन को रोचक एवं शिक्षाप्रद बनाने के लिए सोचने व समझने की पूर्ण स्वतंत्रता तथा मनोरंजनात्मक बौद्धिक वातावरण का होना भी किसी व्यक्तित्व के विकास में आवश्यक है। इसी प्रकार अध्ययन करने में जहाँ किसी प्रकार की कठिनाई पाठकों को आती है तब उसके तत्काल समाधान की व्यवस्था भी होनी चाहिए। इस प्रकार का वातावरण एवं सुविधा पुस्तकालयों में ही मिल सकती है। पाठक चाहे किसी भी शैक्षणिक स्तर के हों, पुस्तकालय बिना किसी भेद-भाव के उनके अध्ययन के लिए आवश्यक साधन व साहित्य प्रस्तुत करता है। अत: पुस्तकालय लोगों के अध्ययन की प्रवृत्ति बढ़ाने, शिक्षित करने एवं अध्ययन को उपयोगी बनाने में योगदान देता है। शिक्षा के क्षेत्र में पुस्तकालय के इस महत्वपूर्ण योगदान पर ही डॉ. एस.आर. रंगनाथन ने कहा है, 'पुस्तकालय जीवन पर्यन्त स्व अध्ययन करने का एक सार्वभौमसाधन है।' शिक्षा के द्वारा व्यक्ति, समुदाय,समाज और राष्ट्र आर्थिक व वैज्ञानिक क्षेत्र में बराबर उन्नति करता जाता है। जिस देश व समाज की जनता जितनी शिक्षित होगी वह राष्ट्र आर्थिक व वैज्ञानिक क्षेत्र में उतना ही विकास करेगा। अत: विश्व में होने वाले विभिन्न प्रगति, नई खोज और उपलब्धियों से केवल पुस्तकालय ही तत्काल अवगत करा सकता है। पुस्तकालय के अध्ययन से ही विश्व के सारे बुद्धिजीवी व औद्योगिक क्षेत्र से संबंधित वर्ग को नवीनतम जानकारी उपलब्ध करायी जा सकती है। इसके फलस्वरुप जीवन के

1- सुन्देश्वरन, के.एस.: ग्रंथालय एवम् समाज: नई दिल्ली:एस.एस. पब्लिशर्स, पेज -13

प्रत्येक क्षेत्र में विकास होता है और समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने प्रयत्न एवं पुस्तकालय के सहयोग से बढ़ता है व राष्ट्र की उन्नति में अपना योगदान देता है।

अन्न,वस्त्र और मकान की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति के पश्चात् व्यक्ति सामान्यतः राजनैतिक,सामाजिक व सांस्कृतिक चिन्तन की ओर उन्मुख होता है। यह व्यक्ति की स्वभाविक रुचि होती है कि वह अपने आस-पास, समाज, राज्य व देश-विदेश में घटने वाली घटनाओं, नये-नये विचारों के संबंध में जाने एवं उनके बारे में फिर अपने विचारों को गति प्रदान करे। इनके अलावा सामाजिक दुर्भावनाएं जैसे स्वार्थ, अहंभाव,मनमुटाव,दुराचार और भ्रष्टाचार आदि भी समाज में विद्यमान होते है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्य और अधिकार से परिचित होता है तथा उनके परस्पर संबंध से भी अच्छी तरह परिचित होता है तब उनके अनुसार ही अपने कार्य करता है जिससे सामाजिक दुर्भावनाएं बहुत हद तक दूर हो सकती है। इसके लिए राजनैतिक व सामाजिक वातावरण में आने वाले निरंतर बदलाव में तुलनात्मक दृष्टि से क्या उचित है ? तथा क्या अनुचित है ? इस बात से परिचित होने के लिए आवश्यक व्यवस्था होनी चाहिए। प्रबुद्ध समाज व राष्ट्र में इस कार्य को करने का दायित्व सामाजिक, शैक्षणिक संस्था, संगठन व केन्द्रों पर होता है। ''ज्ञान के लिए ज्ञान'' इस युक्ति को ध्यान में रख कर समाज के विभिन्न पहलुओं के सारे अच्छे व उपयोगी विचार लोगों के सामने आना चाहिए आधुनिक समाज में ज्ञान के संग्रहकर्ता के रुप में ग्रंथालय इस दायित्व को पूरा करता है। जनता को अपने कर्तव्यो एवं अधिकारों के प्रति सजग बनाये रखने में, अवकाश के समय सूचना परक,मनोरंजक एवं सामान्य ज्ञान परक साहित्य उपलब्ध कराने में पुस्तकालय आधुनिक समाज का एक आवश्यक अंग है। यह अवकाश का सदुपयोग करने के लिए पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करता है इस तरह से लोग आलस्य, अति निद्रा,दुराचार,दुर्भावना से भी बच सकते हैं। इस प्रकार आधुनिक ग्रंथालय प्रजातंत्र पर आधारित राजनैतिक विचार धारा, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विचार धाराओं को सदा गतिशील एवं परिष्कृत बनाये रखने में भी सहायक सिद्ध होता है। पियर्स बटलर के शब्दों में '' ग्रंथ जातीय स्मृति की सुरक्षा के लिए निर्मित एक युक्ति है और ग्रंथालय जीवित व्यक्तियों की चेतना में उसे पहुँचाने का संयंत्र है।''[1] समाज की खुशी के लिए अभिलेखों की उपयोगिता को बढ़ाना पुस्तकालय के द्वारा ही संभव है। इसीलिए अध्ययन सामग्री का संकलन तथा उसका संग्रह पुस्तकालयों में किया जाता है जिसकी सहायता से पुस्तकालय ज्ञान का संगठन एवं विकेन्द्रीकरण कर ज्ञान के क्षेत्र को बढ़ाने में विद्वान व वैज्ञानिकों का मार्गदर्शन करता है। इस तरह व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए आधुनिक युग में यह आवश्यक है कि शिक्षा, सूचना और ज्ञान सब के लिए सुलभ हो, ज्ञान का केन्द्र सार्वजनिक हो। इसका उद्देश्य केवल आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक उन्नति ही नहीं है अपितु मानव जीवन के शाश्वत मूल्यों और आदर्शो की प्राप्ति से ही व्यक्ति का विकास संभव है। व्यक्तित्व के विकास को ही वास्तविक शिक्षा की पूर्ति माना जा

1- पियर्स, बटलर कोटेड बाई भार्गव, जी.डी.: लाइब्रेरियनशिप इन इंण्डिया एण्ड एब्राड, 1977, पेज-06

सकता है। आधुनिक युग में पुस्तकालय व्यक्तियों को उनके जीवन के आदर्शों व मुल्यों को पाने में हर सम्भव सहयोग करता है। राष्ट्रीय स्तर पर प्रेरणा प्रद एवं उत्कृष्ट साहित्य का संगठन एवं उनमें विवेचित विषयों का वितरण कर नये साहित्य के सर्जना में पुस्तकालय मनुष्य का मार्ग दर्शन करता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न केन्द्रों से संपर्क कर देश विदेश के साहित्य , संस्कृति और विचारधाराओं में समन्वय बनाये रखने में और इसके माध्यम से शांति, सद्भाव व मैत्री भाव बनाने में सहयोग प्रदान करता है।

इस प्रकार समाज की बुनियाद को मजबूत बनाकर उसे सगंठित राष्ट्र व समाज के रुप में प्रस्तुत करने में पुस्तकालय का योगदान महत्व पूर्ण है। ज्ञान,विचार और सूचनाओं को पुस्तकालय युगों से सहेजे हुए हैं समाज के विकास में पुस्तकालय की भूमिका अनुपम है। सामाजिक आवश्यकताओं के अनुसार यह उनकी पूर्ति करता रहा है समाज का सर्वतोन्मुखी उन्नति ही इस का प्रमुख लक्ष्य रहा है। इस तरह हम कह सकते हैं कि ग्रंथालय वर्तमान और भावी जनता के उपयोग हेतु स्थापित एक सामाजिक संगठन है।

3.15 प्रकार

वर्तमान समय में जब ज्ञान का प्रचार -प्रसार द्रुत गति से हो रहा है यह सम्भव नहीं है कि एक प्रकार के पुस्तकालय समस्त प्रकार के पाठको की आवश्यकता को पूरा कर सके। इस दृष्टि से पुस्तकालयों के अनेक प्रकार प्रचलित हो गये है। किन्तु किसी पुस्तकालय को स्थापित करने से पहले हम उसके उद्देश्य,क्षेत्र को पूर्व में ही निर्धारित कर लेते है उद्देश्यों का निर्धारण पुस्तकालय का उपयोग करने वालों की पठन सामग्री,अभिरुचि, शैक्षणिक स्तर, आयु सीमा, वित्तीय संसाधन आदि अनेक तत्वों के आधार पर होता है अत: पाठकों की विविध प्रवृत्ति अलग -अलग उद्देश्य के आधार पर पुस्तकालय स्थापित हो रहे हैं अर्थात् पुस्तकालय का प्रकार पाठकों के उस विशिष्ट वर्ग की प्रवृत्ति के आधार पर निश्चित होता है जिसको ध्यान में रखकर पुस्तकालय विशेष की स्थापना की जाती है ।

इस प्रकार सभी स्थानों पर पुस्तकालय विविध रुप में विद्यमान हैं, जिनमें शाला, महाविद्यालय विश्वविद्यालय, शोध, सार्वजनिक, विशिष्ट पुस्तकालय मुख्य है। यहाँ यह कहना तर्क संगत होगा कि सभी पुस्तकालयों का मूल उद्देश्य ज्ञान अर्जन में पाठकों की सहायता करना है। तथापि उनकी जिज्ञासा का क्षेत्र भिन्न-भिन्न हो सकता है। इस प्रकार पुस्तकालय विश्व के लिपिबद्ध विचार व सामग्रियों को संगठित करता है, एवं सुरक्षित रखता है, ताकि उन्हें वर्तमान और भावी पीढ़ी के पाठकों को उपलब्ध कराया जा सके ।

अत: संग्रह के प्रकार एवं उपयोग कर्ताओं की भिन्न-भिन्न श्रेणियों के आधार पर पुस्तकालय को मुख्य रुप से तीन भागों में बांटा जा सकता है -

3.151 सार्वजनिक पुस्तकालय

सार्वजनिक पुस्तकालयों का अर्थ है ''जनता के व्दारा , जनता के हित में संचालित पुस्तकालय ''[1] इसके द्वारा समाज के प्रत्येक वर्ग, वर्ण, धर्म, सम्प्रदाय, विचार, लिंग व उम्र के लोगों को

1- सिंह, रामशोभित: पुस्तकालय संगठन एवम् प्रशासन, पेज-420

पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। पाठ्य सामग्री द्वारा समाज के प्रत्येक व्यक्ति की सेवा करना सार्वजनिक पुस्तकालय कर्तव्य होता है।

सार्वजनिक पुस्तकालय आधुनिक युग एवं प्रजातंत्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। व्यापक शिक्षा के लिए जीवन भर सेवा प्रदान करने वाले साधन के रुप में इसका महत्व है। मुख्यत: यह नागरिकों को शिक्षित करता है, किन्तु पाठकों में पठन की रुचि जागृत करने में भी इसका महत्व पूर्ण योगदान होता है

यूनेस्कों सार्वजनिक पुस्तकालय घोषणा पत्र 1949, संशोधित 1972 के अनुसार सार्वजनिक पुस्तकालय है [1] -

1. जो निश्चित अधिनियम द्वारा स्थापित हो।
2. जिनका संचालन पूर्ण रुप से जनता के धन द्वारा हो।
3. जो पूर्ण रुप से नि:शुल्क व समुदाय के लिए समान रुप से उपलब्ध हो।

इसके निम्न भेद हैं -

1. राष्ट्रीय पुस्तकालय
2. राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय
3. जिला केन्द्रीय पुस्तकालय
4. अनुमंडलीय पुस्तकालय
5. नगर पुस्तकालय
6. प्रखंड पुस्तकालय
7. पंचायत पुस्तकालय
8. ग्रामीण पुस्तकालय

पुस्तकालय सलाहकार समिति भारत सरकार ने भारत में सार्वजनिक पुस्तकालयों के पाँच भेद बतायें हैं -

1. राष्ट्रीय पुस्तकालय
2. राज्य पुस्तकालय
3. जिला पुस्तकालय
4. प्रखंड पुस्तकालय
5. पंचायत पुस्तकालय

3.152 शैक्षणिक पुस्तकालय

कोई भी शिक्षण संस्था एक अच्छे व सम्पन्न पुस्तकालय के बिना अधुरी है। श्री फ्रांसीस केपल के अनुसार " राष्ट्र की उच्च शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थाओं का स्तर कुल संस्थाओं में

1- अग्रवाल, एम.ए. एवम् शर्मा,प्रमोद: सार्वजनिक पुस्तकालय संगठन: जयपुर: आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, 1995, पेज-05

कार्यरत पुस्तकालयों का ग्रंथ पत्र-पत्रिकाओं तथा शोध सामग्री की पर्याप्तता के आधार पर निर्धारित किया जाता है '' [1]।

अत: पुस्तकालय किसी भी संस्था का महत्वपूर्ण अंग है। तथा इसे उस संस्था का हृदय कहा जा सकता है , क्योंकि उसकी शक्ति एवं प्रभाव संस्था के उत्तरोत्तर विकास में अपना प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है। उक्त अभिव्यक्ति से यह स्पष्ट हो जाता हैं कि शिक्षण संस्था में पुस्तकालयों की उपयोगिता विवाद से परे है। इसका प्रमुख उद्देश्य छात्रों को कक्षाओं में अर्जित ज्ञान को पूर्ण तथा विकसित करना है, तथा छात्र में मौलिक चिंतन की शक्ति उत्पन्न करना है। ऐसे पुस्तकालय उन्ही विषयों पर सामग्री का संकलन करते हैं, जिसका अध्ययन-अध्यापन उस संस्था में होता हैं एवं जिनका संबंध पाठ्यक्रम संबंधी विषयों को समृध्द करने से होता है। इनमें जन रुचि के सामान्य विषयों पर सामग्री का संकलन कम ही होता है।

इसके निम्न भेद हैं -

1. शाला पुस्तकालय
2. महाविद्यालयीन पुस्तकालय
3. विश्वविद्यालयीन पुस्तकालय

(विस्तृत विवेचना पुस्तकालय के कार्य में किया गया है।)

(कुछ विद्वान शोध पुस्तकालय को शैक्षणिक पुस्तकालय के अन्तर्गत रखते हैं परन्तु इस अध्ययन में शोध पुस्तकालय को विशिष्ट पुस्तकालय के अन्तर्गत रखा गया है।)

3.153 विशिष्ट पुस्तकालय

जहाँ तक सार्वजनिक अथवा शैक्षणिक पुस्तकालय की बात है, यह पाठकों की सामान्य आवश्यकता को पूरा करती है। उनमें अनेक विषयों पर साहित्य संग्रहित किया जाता है जिनमें अधिक गहराई से पठन सामग्री नहीं होती एवं विषय से संबंधित सामान्य व हल्की जानकारी होती है। परन्तु ऐसे पाठक जिन्हें विशेष विषय पर अद्यतन (अप-टू-डेट) सूक्ष्म जानकारी चाहिए तो इन कार्यो को विशिष्ट पुस्तकालय ही संपादित कर पाते है।

सामान्य पाठक वर्ग के अतिरिक्त पाठकों के कुछ ऐसे विशेष वर्ग होते हैं, जो अपनी विशेष परिस्थितियों,सीमाओं के कारण सामान्य पुस्तकालय का उपयोग नहीं कर पाते अथवा ये कहें कि उन्हें अपनी रुचि व जरुरत के अनुरुप, अनुकुल अध्ययन सामग्री नहीं मिल पाती। इन पाठकों के लिए तब उनकी रुचि, जरुरत के अनुसार विशेष प्रकार की अध्ययन सामग्री तथा विशिष्ट पुस्तकालय सेवा प्रदान की जाती है जो कि केवल विशिष्ट पुस्तकालय ही कर सकते हैं। ये पुस्तकालय सेवा को वर्ग विशेष में अधिक अनुकूल तभी बनाया जा सकता है जब उन पुस्तकालयों का स्वतंत्र अस्तित्व हो। अत:

1- सक्सेना, एल.एस.: पुस्तकालय संगठन एवम व्यवस्थापन: भोपाल:म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पेज-27

हैंण्डबुक आफ स्पेशल लाइब्रेरियन शीप एण्ड इन्फारमेशन वर्क नामक पुस्तक में इसको परिभाषित करते हुए कहा गया है कि " विशिष्ट पुस्तकालय एक ऐसा पुस्तकालय है जिसमें किसी विशिष्ट विषय अथवा विषयों पर ही अध्ययन सामग्री उपलब्ध हो "[1] ।इनके निम्न विभेद किए गए है -

1.**शोध पुस्तकालय** :- ऐसे पुस्तकालय अलग -अलग क्षेत्रों से संबंधित होते है जो कि ज्ञान की वृध्दि में लगे शोधार्थी को सहायता प्रदान करती है ऐसे पुस्तकालय ज्ञान के किसी क्षेत्र की उन्नति से संबंधित होते हैं। जैसे- भौतिक,रसायन,कृषि अनुसंधान आदि है।

2.**विभागीय पुस्तकालय :-** सरकारी संस्थान प्रशासन को सुचारु रुप से चलाने के लिए होते है जैसे लोकसभा, विधान सभा,योजना आयोग के पुस्तकालय।

3.**व्यवसायिक पुस्तकालय :-** इस प्रकार के पुस्तकालय का संबंध वाणिज्य व्यवसाय से संबंधित होता है। जिससे वाणिज्य पत्र-पत्रिकाएं,समय सारणी,आंकड़े,मान चित्रावलियाँ व्यापारिक कार्य में सहायता करने वाले ग्रंथ, मूल्य से संबंधित आंकड़े,कानून संबंधी,बाजार संबंधी आंकड़े,आयकर,बिक्री आदि से संबंधित सूचना संग्रहित होती है।

4.**औद्योगिक पुस्तकालय :—** लोहा,स्पात,सीमेंट,कपास,चीनी,रेशम, आदि से संबंधित उघोगों में उद्योग धंधों के समुचित विकास के लिए एवं बाजार में अपनी प्रतिस्पर्धा बनाए रखने के लिए ये पुस्तकालय उद्योग से संबंधित महत्व पूर्ण जानकारी संग्रहित करते हैं।

5.**अस्पताल पुस्तकालय :-** रोगियों को आत्मसंबल देने में एवं आत्म विश्वास बढ़ाने के लिए अस्पताल पुस्तकालय ऐसे प्रेरणाप्रद साहित्य का संग्रह करते हैं जो उसे अपने परेशानियों/रोगों से लड़ने के लिए जागृत करती है साथ ही साथ समय व्यतीत करने के लिए मनोरंजक साहित्य का भी संग्रह किया जाता है।

6. **अंधों के लिए पुस्तकालय :-** यहाँ विशेष प्रकार के ब्रेल साहित्य का संग्रह किया जाता है।

7. **जेल पुस्तकालय :-** जेल के कैदियों में अपराधिक प्रवृत्ति को रोकने वाले एवं समय व्यतीत करने के लिए जेल पुस्तकालय ऐसे साहित्य का संग्रह करता है जो प्रेरणास्पद भी हो।

8. **संगीत पुस्तकालय :-** संगीत के ग्रंथों का संग्रह करने वाले पुस्तकालय जिनमें ग्रामोफोन,चलचित्र,रिकार्ड व इन विषयों से संबंधित पुस्तकें होती है।

9. **समाचार पत्र पुस्तकालय :-**प्रत्येक समाचार पत्र कार्यालय के साथ वहाँ के कर्मचारियों के संदर्भ के लिए अलग पुस्तकालय होता है जो समाचार से संबंधित किसी प्रकार की सूचना आवश्यकतानुसार संपादक,संवाददाता या अन्य व्यक्ति को देता है। दैनिक समाचार पत्र में किसी भी विशेष विषय पर प्रस्तुत संदर्भ लेने में ऐसे पुस्तकालयों से सहायता ली जाती है।

10. **बाल पुस्तकालय :-** बच्चों में पुस्तकें पढ़ने की प्रवृत्ति डालने,मानसिक विकास आदि के लिए बाल पुस्तकालय स्थापित किये जाते हैं जो उनके व्यक्तित्व व चरित्र को सुदृढ़ बनाने में सहायक होता है। इनमें भिन्न-भिन्न पाठ्य सामग्री (बाल साहित्य) कहानी, कविता व ज्ञान -विज्ञान ,खेल कूद से संबंधित

1- सहगल, आर.एल.: पुस्तकालय संगठन एवम् प्रशासन: भोपाल: म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पेज-41

साहित्य होता है जिसे पढ़कर बच्चों में इन विषयों के प्रति रुचि जागृत होती है।

इनके अलावा निम्न भी विशिष्ट पुस्तकालय के अन्तर्गत रखे जाते है -

11. नाविक पुस्तकालय :- नाविकों के लिए स्थापित यह पुस्तकालय उन्हें सांसारिक घटनाओं, देश विदेश से संबंधित जलवायु, भोजन,वस्त्र, रीति रिवाज, स्वास्थ्य के अलावा मनोरंजक साहित्य उपलब्ध कराता है। डॉ0 एस0आर0 रंगनाथन ने ''पुस्तकालय विज्ञान के पाँच सूत्र'' में इन पुस्तकालयों को महत्व पूर्ण बताया है।

12. दृश्य-श्रव्य पुस्तकालय :- इस प्रकार के पुस्तकालयों में चलचित्र, ग्रामोंफोन रिकार्ड्स, टेपरिकार्ड्स, माइक्रोफिल्म आदि व इन विषयों से संबंधित पत्र-पत्रिकाएं संग्रहितकी जाती है। विकसित पुस्तकालय में यह पुस्तकालय एक विभाग के रुप में कार्य करता है।

पुस्तकालय

सार्वजनिक पुस्तकालय

1. राष्ट्रीय पुस्तकालय
2. जिला केन्द्रीय पुस्तकालय
3. अनुमंडलीय पुस्तकालय
4. नगर पुस्तकालय
5. प्रखण्ड पुस्तकालय
6. पंचायत पुस्तकालय
7. ग्रामीण पुस्तकालय

शैक्षणिक पुस्तकालय

1. शाला पुस्तकालय
2. महाविद्यालय पुस्तकालय
3. विश्व विद्यालय पुस्तकालय

विशिष्ट पुस्तकालय

1. शोध पुस्तकालय
2. विभागीय पुस्तकालय
3. व्यवसायिक पुस्तकालय
4. औद्योगिक पुस्तकालय
5. अस्पताल पुस्तकालय
6. अंधो के लिए पुस्तकालय
7. जेल पुस्तकालय
8. संगीत पुस्तकालय
9. समाचार पत्र पुस्तकालय
10. बाल पुस्तकालय
11. नाविक पुस्तकालय
12. दृश्य-श्रव्य पुस्तकालय

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पुस्तकालयों में भेद उसके उपयोग के कारण हुआ है। दूसरे शब्दों में पुस्तकालय पाठकों की पाठ्य अभिरुचि, शिक्षा के स्तर, कार्य क्षेत्र, आयुसीमा,शोध विषय पर आधारित होते हैं प्रत्येक प्रकार के पुस्तकालय सदस्य की रूचि व जरूरत के अनुसार पुस्तकालय सेवा देने के उद्देश्य से विभिन्न प्रकार के पुस्तकालयों की स्थापना की जाती है अत: संग्रह के प्रकार एवं उपयोगकर्ता के भिन्न-भिन्न कोटि के कारण ही पुस्तकालय के उपरोक्त वर्णित प्रकार अस्तित्व में आये हैं।

3.16 कार्य

पुस्तकालय की आवश्यकता एवं उसके महत्व के अध्ययन से ही पुस्तकालय के कार्य स्पष्ट हो जाते हैं हालांकि अलग-अलग क्षेत्रों में कार्यरत पुस्तकालय के कार्य उस क्षेत्र से संबधित आवश्यकता के अनुसार होते है। परन्तु एक कार्य जो कि समस्त आवश्यकताओं की होती है वह नवीन सूचना या नवीन विचार धारा का वितरण। पुस्तकालय का महत्वपूर्ण कार्य यह होता है कि नवीन सूचना जो चाहे किसी भी क्षेत्र से संबंधित हो, का सगंठन करना एवं उसका वितरण करना ताकि प्रत्येक वर्ग के पाठक अपने संबंधित विषय से नवीनतम जानकारियों से परिचित होते रहे, जो उनके बौद्धिक एवं व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक हैं।

इस अध्याय में पुस्तकालयों के जो प्रकार दिये गये हैं उनको आधार मानकर उनके कार्यो का संक्षिप्त में विवेचन किया गया है -

3.161 सार्वजनिक पुस्तकालय के कार्य

सामान्यत: सार्वजनिक ग्रंथालय के पाठक विभिन्न क्षेत्रों से होते हैं। शैक्षणिकेत्तर पाठक जो औपचारिक शिक्षा के बाद अपनी ज्ञान पिपासा एवं उनका व्यवसाय जिस क्षेत्र से संबंधित होता है , उससे संबंधित अध्ययन की सुविधा इस प्रकार के पुस्तकालयों में दी जाती है। अत: इस प्रकार के पुस्तकालयों का कार्य काफी वृहद पैमाने पर होता है।

सार्वजनिक पुस्तकालय सर्वसाधारण लोगों का पुस्तकालय होने के निम्न तीन कारण हैं -

1. अशिक्षित को साक्षर एवं शिक्षित बनाना।
2. प्रौढ़ो में अध्ययन की प्रवृत्ति को बढ़ाना।
3. समाज में सदा बौध्दिक चेतना और जागृति बनाये रखना।

उपरोक्त कार्य के पूरा होने पर पुस्तकालय अन्य कार्यो को प्रभावी ढ़ंग से कर सकता है। उपरोक्त कार्य पुस्तकालय के आधार भूत कार्य है इनके अलावा सार्वजनिक पुस्तकालय को निम्न कार्य भी संपादित करना चाहिए -

1. पुस्तकालय के आस-पास के क्षेत्र में निवास करने वाले समस्त लोगों के व्यक्तिगत और सामुहिक बौद्धिक आवश्यकता के सभी साहित्य का संकलन जिसमें नगर का भूगोल व इतिहास, स्थानीय उद्योग धंधे, सामाजिक विषय पर आधारित पाठ्य सामग्री, सामान्य शिक्षा और ज्ञान से संबंधित साहित्य के अलावा देश की सभ्यता, धर्म, दर्शन, इतिहास व भूगोल, महान व्यक्तियों की जीवनी व उनसे सबंधित

साहित्य, बाल साहित्य का संकलन पुस्तकालय में होना चाहिए। इसके अलावा सूचना प्रद,मनोरंजक और प्रेरणाप्रद साहित्य भी पुस्तकालय में होना चाहिए।

2. पुस्तकालय में संकलित पाठ्य सामग्री की उपयोगिता तब तक बनी रहती है, जब तक पाठक की पहुँच साहित्य तक आसानी से हो। चूँकि सार्वजनिक पुस्तकालय में विभिन्न स्तर के पाठक वर्ग होते है, अतः पुस्तकालय व्यवस्था इस प्रकार होनी चाहिए कि प्रत्येक पाठक को उनकी अभिष्ट पाठ्य सामग्री आसानी से प्राप्त हो सके। यदि उन्हें अपनी इच्छित पाठ्य सामग्री आसानी से सुलभ नहीं होती है, तो पुस्तकालय के प्रति उनकी रुचि कम होती जाएगी, जो पुस्तकालय के ध्येय को कमजोर बनाती है। अतः पुस्तकालय सेवा उत्कृष्ट होनी चाहिये। ताकि पाठक कम-से-कम समय में अपनी इच्छित पाठ्य सामग्री प्राप्त कर सके। पुस्तकालय व्यवस्था उचित होने पर भी कभी-कभी पाठको को अपनी इच्छित सामग्री प्राप्त करने में कठिनाई होती है। इस हेतु पुस्तकालय द्वारा उन्हें आवश्यक मार्गदर्शन व बौद्धिक सहायता प्रदान करने हेतु व्यक्तिगत सेवा की व्यवस्था होनी चाहिए।

3. सार्वजनिक पुस्तकालय का महत्वपूर्ण कार्य पाठकों के मन में पुस्तकालय उपयोग के प्रति ध्यान आकृष्ट कराना है, अतः पुस्तकालय को समय-समय पर ऐसे आयोजन करते रहना चाहिए, जिससे उन वर्ग को जो पुस्तकालय आने में कतराते हैं उनके भी मन में पुस्तकालय उपयोग के प्रति रुचि जागृत हो और वह अपने फुर्सत के समय पुस्तकालय में आकर पठन-पाठन में व्यतीत करें जिससे उनकी बौद्धिक चेतना में वृद्धि हो।

डॉ. रंगनाथन ने सार्वजनिक पुस्तकालय के कार्यों के संबंध में कहा है कि '' सार्वजनिक पुस्तकालयों के कार्य शैक्षणिक, सूचनात्मक, राजनैतिक, आर्थिक, प्रौद्योगिक, सांस्कृतिक तथा पुराविद् है।''[1] यानि सार्वजनिक पुस्तकालय अपनी शैक्षणिक कार्यो के अन्तर्गत जनता की शैक्षणिक अभिरुचि की पूर्ति करता है एवं बौध्दिक जिज्ञासा की पूर्ति अपने सूचनात्मक कार्यों के माध्यम से करता है। यथा -

- राजनैतिक कार्यों के अन्तर्गत वह स्वस्थ जनमत का निर्माण करता है।
- आर्थिक कार्यों के अंतर्गत विकसित तकनीक व उत्पादन की नवीन विधियों के संबंध में जानकारी प्रदान कर उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ करता है।
- सांस्कृतिक कार्यों के अन्तर्गत राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृति , सभ्यता, कला व ज्ञान के विषय में अवगत कराता है।
- पुराविद् कार्यो के अन्तर्गत यह जनता को प्राचीन साहित्य, ज्ञान, कला, सभ्यता एवं संस्कृति से संबंधित विभिन्न प्रकार के साहित्य उपलब्ध कराता है। अतः इसका कार्य क्षेत्र सम्पूर्ण समाज होता है।

1- अग्रवाल, एम.एल.: सार्वजनिक पुस्तकालय संगठन: जयपुर: आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, पेज-09

रावर्ट डी.ले.- ने सार्वजनिक पुस्तकालय के कार्यों को बिन्दुवार विभाजित किया है -

1. जन जीवन- विविध विषयों के प्रति जन रुचि जागृत करना एवं लोगों की बौद्धिक क्षमता बढ़ाने बें उनकी सहायता करना।
2. उद्योग धंधे-संबंधित क्षेत्र में स्थापित उद्योग संबंधी नवीनतम जानकारी उपलब्ध कराना एवं उपयोगी धंधों में प्रवीण होने के लिए लोगों को आवश्यक सूचनाएं उपलब्ध कराना है।
3. सांस्कृतिक क्षेत्रों में लोगों को अवसर प्रदान करने में एवं उनकी क्षमता बढ़ाने के लिए आवश्यक साहित्य उपलब्ध कराना।
4. मनोरंजक - अवकाश के समय का सदुपयोग करने एवं उसके द्वारा व्यक्तिगत एवं सामाजिक कल्याण की वृद्धि करने में लोगों की सहायता करना।
5. सुचना - विभिन्न स्तर के पाठकों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित चाही गई जानकारी उपलब्ध क राने में पुस्तकालय को सदैव सजग रहना चाहिए।
6. वे लोग जो किसी विशेष क्षेत्र में विशेष विषय पर ज्ञान के विस्तार में सहायता कर रहे हैं, उन लोगों को उनसे संबंधित जानकारी उपलब्ध कराना अर्थात् शोधार्थी को शोध परक जानकारी उपलब्ध कराना।

अत: सार्वजनिक पुस्तकालय का कार्य क्षेत्र काफी फैला हुआ होता है। जहां विविध विषयों पर विभिन्न बौद्धिक स्तर के पाठक अपनी जिज्ञासा शांत करना चाहते हैं। ऐसे में सार्वजनिक पुस्तकालय का कार्य अत्यंत उत्तरदायित्व पूर्ण हो जाता है, कि वे समस्त प्रकार के पाठकों का ज्ञान बढ़ाने में उनकी सहायता करें एवं ऐसा वर्ग जो पुस्तकालय सेवा से अपरिचित है उन्हें इस सेवा से अवगत करा पुस्तकालय उपयोग हेतु प्रेरित करने में सहायता करें।

3.162 शैक्षणिक पुस्तकालय के कार्य

व्यवहारिक शिक्षा का उद्देश्य मुख्यत: विद्यार्थी के छुपे हुए बौद्धिक चेतना को जागृत कर उन्हें विकसित करना है ताकि वे अपने विषय से संबंधित नवीनतम जानकारी को प्राप्त करने में सदैव सजग रहे। इसके अलावा छात्रों के अध्ययन से संबंधित विषयों से अच्छी तरह अवगत कराना और ज्ञान के क्षेत्र में विद्यार्थियों को स्वावलम्बी बनाना।

व्यवहारिक शिक्षा के उपरोक्त उद्देश्य बिना किसी पुस्तकालयीन सहायता के असंभव है क्योंकि कोई भी जानकारी जो नवीनतम् और प्राचीन है उनकी आवश्यकता छात्रों को अपने विषय के अध्ययन के लिए आवश्यक है। किन्तु आज चारों ओर ज्ञान का विस्फोट जिस तेजी से हो रहा है वहां किसी भी छात्र या शिक्षक के लिए यह सम्भव नहीं है कि वे समस्त जानकारी का संकलन बिना किसी पुस्तकालयीन सहायता के कर सकें। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे दिन-रात शोध व उनके नित नये परिणाम व उससे उत्पन्न नये तथ्य इन सबका संकलन किसी पुस्तकालय के द्वारा ही संभव है। और छात्रों के शैक्षणिक विकास हेतु इन नित नये हो रहे प्रयोग की जानकारी छात्रों को देनी भी आवश्यक है ताकि वे अपने विषय पर हो रहे नवीनतम खोजों व शोधों से अवगत रहें। एवं उनका उपयोग अपने अध्ययन में

कर सके, ऐसे में शैक्षणिक पुस्तकालय का यह दायित्व बन जाता है कि वे अपने शैक्षणिक संस्थान में पढ़ाए जाने वाले विषयों एवं उनसे संबंधित नवीनतम पाठ्य सामग्री शिक्षकों व छात्रों के लिए हमेशा उपलब्ध रखे।

शैक्षणिक ग्रंथालय विभिन्न स्तर के होते हैं शाला पुस्तकालय, महाविद्यालयीन पुस्तकालय, विश्वविद्यालय ग्रंथालय। शाला पुस्तकालय का कार्य बच्चों में पढ़ने-पढ़ाने की रुचि जागृत करना है मौलिक विषयों से छात्र-छात्राओं को परिचित कराना और विद्यार्थियों में सामान्य ज्ञान, अच्छे विचार और रुचि का विकास करने हेतु ऐसे साहित्य उपलब्ध कराना। प्रयोगशाला के रुप में ग्रंथालय का और साधन के रुप में पुस्तकों के उपयोग कैसे करना है इस संबंध में शिक्षा देना (जिसे पुस्तकालय शिक्षा भी कहा जाता है)। ऐसे साहित्य उपलब्ध कराना जिससे उनमें अध्ययन के प्रति रुचि जागृत हो, इस प्रकार शाला पुस्तकालय बच्चों को ज्ञान के क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए उन्हें योग्य बनाने में अपना महत्वपूर्ण कार्य करता है।

सन् 1951-52 में भारत सरकार द्वारा डा.ए. लक्ष्मण स्वामी मुदलियार की अध्यक्षता में नियुक्त माध्यमिक शिक्षा आयोग ने शाला पुस्तकालय के संबंध में उपयोगी सुझाव दिये थे, जिसका सार यह है कि ''पुस्तक एवं पुस्तकालय की उपयोगिता बढ़ाने के लिए पुस्तकालय को कई कार्य करने चाहिए जिनमें व्यक्ति गत रुप से छात्रों का मार्गदर्शन , उपलब्ध ग्रंथों की ओर उनका ध्यान आकृष्ट करना, पुस्तकों का विज्ञापन, समय-समय पर पुस्तक प्रदर्शिनी का आयोजन एवं समूह अध्ययन आयोजित करना आदि है।''[1] शाला शिक्षा में बाल छात्र शैक्षणिक जगत में प्रवेश कर शिक्षा के तीन प्रारंभिक चरणों में पूरा करता है प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षा, शिक्षा के इन प्रारंभिक चरणों में किसी भी छात्र की बौद्धिक चेतना को जागृत करने, उसके चरित्र के निर्माण. मौलिक विषयों से परिचय, अध्ययन की प्रवृत्ति विकसित करने तथा सामान्य ज्ञान, अच्छे विचार और रुचि का विकास करने की दिशा में शाला शिक्षा कार्य करता है तथा शाला शिक्षा के उद्देश्य को पूरा करने में पुस्तकालय निम्न रुप से सहायता करता है -

- सचित्र एवं उदा. पर आधारित पाठ्य सामग्री उपलब्ध कर अध्ययन कला को विकसित करता है।
- प्रयोगशाला के रुप में ग्रंथालय का और साधन के रुप में पुस्तकों का उपयोग कैसे करना है, उसकी शिक्षा देता है।
- सूचनाप्रद एवं मनोरंजक अध्ययन के प्रति रुचि जागृत करना।
- विविध विषयों से परिचित होने के लिए अवसर उपलब्ध कराना।

इस तरह से एक बालक के सुप्त बौद्धिक शक्तियों को शाला शिक्षा शाला पुस्तकालय की सहायता से जागृत करता है जो उनको महा. शिक्षा के माध्यम से ज्ञान के क्षेत्र में प्रवेश करने के योग्य बनाता है।

1- सुन्देश्वरन, के.एस.:ग्रंथालय एवम समाज, पेज-31

जब तक एक छात्र स्कूली शिक्षा समाप्त कर महाविद्यालय में प्रवेश करता है तो वह अपने अध्ययन का क्षेत्र लगभग तय कर चुका होता है कि उसे कला, विज्ञान, वाणिज्य, तकनीकी अथवा व्यवसायिक अध्ययन के क्षेत्र में से किस क्षेत्र में अपना कदम बढ़ाना है। ऐसे में महाविद्यालय पुस्तकालय का यह दायित्व बनता है कि वह उस दिशा में कार्य करे जिससे महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थी को अपने विषय क्षेत्र से संबंधित अध्ययन सामग्री प्राप्त हो सके।

महाविद्यायलयीन शिक्षा उच्च शिक्षा का प्रवेश द्वार माना जाता है स्नातक स्तर में तीन विषय जिनके क्षेत्र आपस में संबंधित होते है का अध्ययन एक छात्र को करना होता है। वही स्नातकोत्तर स्तर में किसी एक विषय पर अध्ययन किया जाता है ताकि इस विषय विशेष पर उसे गहराई से एवं सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त हो सके। वही पर तकनीकी, चिकित्सा महाविद्यालय एवं प्रशिक्षण महाविद्यालय में उस क्षेत्र से संबंधित विशेष विषयों पर अध्ययन अध्यापन कराया जाता है। अतः महाविद्यालय स्तर के अध्ययन का उद्देश्य विशेष विषय पर अधिकार प्राप्त करने के लिए आवश्यक योग्यताएं विषयगत भाषा संबंधी व्यापक और तुलनात्मक दृष्टिकोण प्राप्त करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु महाविद्यालयीन ग्रंथालय का कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है जिसके तहत उसे निम्न कार्य संपादित करने आवश्यक हो जाते हैं -

- प्रेरणा प्रद व विचारों को उद्वेलित करने वाले क्लासिक साहित्य का संकलन।
- राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्र एवं पत्रिकाओ का संकलन जो कि सूचना के प्राथमिक स्त्रोत है।
- अध्ययन के लिए छात्रों को आवश्यक मार्गदर्शन देना तथा बौद्धिक सहयोग देना ताकि वे तुलनात्मक दृष्टिकोण से अध्ययन कर सके।
- पुस्तकालय सहयोग के जरिये अन्य पुस्तकालयों से चुने हुए एवं महत्वपूर्ण साहित्य, अध्ययन सामग्री मंगाकर छात्रों को उपलब्ध कराना, जिससे पुस्तकालय का कार्य अधिक प्रभावशाली ढंग से संपादित हो सके।
- मौलिक संदर्भ ग्रंथ, बिबलियोग्राफी उपलब्ध कराना।
- अध्यापकों को अध्यापन हेतु आवश्यक पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराना एवं उनके कार्यों में सहयोग देना।

महाविद्यालय पुस्तकालय में अध्ययन के अलावा ऐसे भी साहित्य उपलब्ध होना चाहिए जिससे छात्रों के साहित्यिक/सामाजिक/सांस्कृतिक/खेलकूद आदि क्रिया-कलापों में इनकी भागीदारी बढ़ सके। इन क्षेत्रों से संबंधित उन्हें देश विदेश के ऐसे साहित्य उपलब्ध कराना चाहिए जिससे इनकी बौद्धिक चेतना और अधिक क्रियाशील हो ताकि अध्ययन के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी वे अपनी उत्कृष्ट भागीदारी दे सके। यू.जी.सी. द्वारा नियुक्त सिद्धांत समिति ने अपनी अनुशंसा में कहा था कि 'शिक्षकों को सलेक्टिव बिबलियोग्राफी बनाकर छात्रों को देनी चाहिए ताकि वे पुस्तकालय में ग्रंथों का अध्ययन सुगमता पूर्वक कर सके।' इस प्रकार महाविद्यालय पुस्तकालय व्यक्तिगत सेवा एवं मार्गदर्शन

द्वारा किसी विषय पर अध्ययन में विभिन्न साहित्य एवं पाठ्य सामग्री को सहायक के रुप में उपलब्ध कराता है जिससे छात्र ज्ञान के क्षेत्र में स्वावलम्बी बनने के लिए स्व-अध्ययन की प्रवृत्ति विकसित करते है जिसके परिणाम स्वरुप छात्रों का बौद्धिक स्तर और ऊंचा होता है और दृष्टिकोण और भी व्यापक होता चला जाता है।

विश्व विद्यालय उच्च शिक्षा एवं शोध का प्रमुख केन्द्र होता है। जहां छात्र महाविद्यालयीन शिक्षा के उपरांत एक विशेष विषय क्षेत्र चुन कर उच्च शिक्षा हेतु आते हैं। शोध का प्रमुख केन्द्र होने के कारण शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े छात्र/प्राध्यापक अपने विषय वस्तु से संबंधित अध्ययन सामग्री हेतु वि.वि. आते है। महाविद्यालय में जहां स्नातक स्तर तक किसी तीन विषय पर एक छात्र अध्ययन करता है वहीं पर वि.वि. में किसी एक विषय विशेष पर अध्ययन किया जाता है जिसमें उस विषय के विभिन्न पहलुओं पर अध्ययन किया जाता है। अत: वि.वि. में किसी एक विषय विशेष पर उसके विभिन्न पहलुओं, दृष्टिकोणों, वैज्ञानिक तथ्यों, नई जानकारियों को जानने का प्रयास किया जाता है ताकि किसी नये विचार/तथ्य को सामने लाया जा सके। यही कारण है कि विश्वविद्यालय एक शोध केन्द्र के रुप में कार्य करता है जहां विद्यार्थी अपनी रुचि अनुसार अपने विषय में पारंगत होने हेतु अध्ययन में तल्लीन रहता है। इस प्रकार विश्व विद्यालय उच्च शिक्षा एवं शोध के द्वारा प्राचीन एवं नवीन ज्ञान और विचारों को सामने लाता है। इसके अलावा अध्यापन, अनुसंधान, प्रकाशन, विस्तार सेवाएं(उदा. पत्राचार पाठ्यक्रम, सेमीनार, यू.जी.सी. की सहायता से विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियां आदि) आदि भी विश्वविद्यालय के कार्य क्षेत्र में आते हैं। तब विश्व विद्यालय ग्रंथालय को उनकी आवश्यकतानुसार ही कार्य करना पड़ता है उसे प्रत्येक विषय पर हर तरह की पाठ्य सामग्री का संकलन करना पड़ता है एवं पुस्तकालय सेवा इस प्रकार देनी पड़ती हैं कि विद्यार्थी/शोधार्थी ग्रंथालय को अपने अध्ययन का एक महत्वपूर्ण एवं आवश्यक साधन के रुप में इस्तेमाल कर सके एवं पुस्तकालय सेवा से उसकी बौद्धिक चेतना को संतुष्टि मिल सके। इस हेतु विश्व विद्यालय पुस्तकालय को निम्न कार्य संपादित करना चाहिए-

- प्रत्येक विषय पर देश विदेश में प्रकाशित ग्रंथों का संकलन।
- संदर्भ ग्रंथों का संकलन।
- दृश्य-श्रव्य साधनों की सुविधा।
- सूचियों का निर्माण।
- वांड्गमय सूची(विषयवार, क्षेत्रवार)।
- प्रलेखन संबंधी विविध कार्य।
- शोध कार्यों के लिए समस्त सुविधाएं उपलब्ध कराना।
- पाठकों की समस्याओं के समाधान हेतु आवश्यक मार्गदर्शन(संदर्भ सेवा)।
- सूचना सेवा।

- देश विदेश से प्रकाशित विभिन्न विषयों पर उत्कृष्ट पत्र/पत्रिकाएं उपलब्ध कराना।
- समय-समय पर विभिन्न स्थानों पर हो रहे शोध कार्यो व संपन्न हो चुके अनुसंधान की जानकारी पाठकों को देना ताकि शोध की पुनरावृत्ति से बचा जा सके।

यदि पुस्तकालय में समस्त साधन व सुविधाएं उपलब्ध हो पर योग्य व कर्तव्य निष्ठ कर्मचारी न हो तो समस्त सुविधाएं बेमानी हो जाती हैं। अत: समस्त स्तर के पुस्तकालयों में ऐसे सक्षम व योग्य कर्मचारी की नियुक्ति भी पुस्तकालय का एक महत्वपुर्ण कार्य है जिससे उत्कृष्ट पुस्तकालय सेवा दी जा सके। प्राथमिक स्तर पर शैक्षणिक पुस्तकालय में ऐसे कर्मचारी की जो मनोवैज्ञानिक रुप से बच्चों के मन में पढ़ने की प्रवृत्ति विकसित कर सके, की आवश्यकता होती है। अत: पुस्तकालय को समस्त प्रकार के कार्यो को सम्पादित करने एवं उत्कृष्ट पुस्तकालय सेवा प्रदान करने हेतु साधन एवं योग्य एवं अनुभवी कर्मचारी का भी चयन किया जाना चाहिए ।

3.163 विशिष्ट पुस्तकालय के कार्य

प्रत्येक व्यवसाय के संगठन विकास तथा विशिष्टीकरण हेतु विशिष्ट ज्ञान, उपकरण और योग्य कर्मचारी प्रबंधन की आवश्यकता होती है अपने विषय में हमेशा अच्छी पकड़ होने के लिए नवीनतम सूचना और नवीन साहित्य की आवश्यकता होती हैं। अत: मितव्ययिता, कुशलता,उत्पादन में वृद्धि तथा कार्यो में निरंतर वृद्धि और सम्बद्ध अन्य संगठनों के कार्यो में वृद्धि के लिए प्रतिस्पर्धा के साथ काम करने के लिए प्रत्येक व्यवसाय, बड़े-बड़े संगठन, संस्थान तथा शासकीय/अशासकीय उद्योग समुह, विभागों को नवीनतम ज्ञान, सूचना और साहित्य की जरुरत होती है जिसके लिए संबंधित संस्थान/विभाग अपने यहाँ पुस्तकालय स्थापित करते हैं। ये पुस्तकालय मिलते जुलते संस्थान के कार्य से संबध्द साहित्य सूचना और आंकड़ों को एकत्रित करते हैं उन्हें संगठित कर संबंधित कर्मचारी को प्रदान करते हैं। औद्योगिक,व्यापारिक वाणिज्य, सूचना संस्था, कंपनी, सभा समितियां, एवं प्रशासकीय संगठन संस्थान इसके उदाहरण हैं।

ए.एल.ए. ग्लोसरी आफ लाइब्रेरी टर्म्स के अनुसार ''विशिष्ट या उद्योग पुस्तकालय एक खास संगठन अथवा समूह को अभीष्ट सूचना उपलब्ध करने वाली एक संगठित सेवा है।''

प्रख्यात ग्रंथालय विज्ञानी डॉ0 एस0आर0 रंगनाथन् विशिष्ट एवं उद्योग पुस्तकालय में अंतर करते हुए कहते हैं कि ''जो मूल संस्था के व्यवसाय अथवा उद्योग से संबंधित कार्य करते हैं वे उद्योग पुस्तकालय है वही विशिष्ट वर्ग जैसे विकलांग, रोगी कैदी आदि के लिए स्थापित पुस्तकालय विशिष्ट पुस्तकालय है ''[1]। परन्तु अन्य ग्रंथालय विज्ञानी दोनों प्रकार के पुस्तकालय को विशिष्ट पुस्तकालय (स्पेशल पुस्तकालय) कहते है। पश्चिमी देशों के पुस्तकालय विज्ञानी भी इस प्रकार के पुस्तकालय को विशिष्ट पुस्तकालय का ही नाम देते हैं। (इस अध्ययन में विशिष्ट व उद्योग पुस्तकालय को एक ही वर्ग विशिष्ट पुस्तकालय के अन्तर्गत रखा गया है।)

1- सुन्देश्वरन, के.एस.: ग्रंथालय एवम समाज: नई दिल्ली: एस.एस. पब्लिशर्स, पेज-82

विशिष्ट पुस्तकालय के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इसका क्षेत्र विशिष्ट होता है तथा इससे संबंधित पाठक भी विशेष क्षेत्र से संबंधित होते हैं । अत: इनके साहित्य भी उस क्षेत्र से संबंधित होने चाहिए । ऐसे साहित्य जो सभी वर्गो के लिए उपयोगी होते है वैसे साहित्य की यहाँ कम ही आवश्यकता होती है जैसा कि रोगी के लिए स्थापित पुस्तकालय में उनमें आत्म विश्वास बढ़ाने के लिए ऐसे साहित्य चाहिए जो उसको उसके रोग से लड़ने के लिए आत्म संबल प्रदान कर सके, वही जेल पुस्तकालय में मनोरंजन के अलावा ऐसे साहित्य उपलब्ध होने चाहिए जो उनके द्वारा किए गए अपराधों के संबंध में आत्म चिंतन के लिए प्रेरित करे ताकि वे जेल से निकलकर समाज में एक सभ्य नागरिक की तरह जीवन व्यतीत कर सके । वही एक विशिष्ट क्षेत्र से संबंधित उद्योग के लिए अपने उद्योग से संबंधित ऐसे साहित्य चाहिए जिसकी सहायता से अपने ज्ञान को और बढ़ाकर संबंधित उद्योग के कार्य क्षमता में बढ़ोत्तरी कर बाजार में उसे प्रतिस्पर्धा में एक स्थान दिला सके ।

विशिष्ट ग्रंथालयों को उपरोक्त प्रकार के ग्रंथालय सेवा देने के लिए अपने पुस्तकालय में विशिष्ट प्रकार के कार्य संपादित करने पड़ते हैं ताकि वे अपने विशिष्ट पाठकों की मांग को पुरा कर उन्हें संतुष्ट कर सके जो कि ग्रंथालय सेवा का एक महत्वपूर्ण उद्‌देश्य है। इस उद्‌देश्य को पूरा करने के लिए उन्हें निम्न कार्य पूरे करने पड़ते हैं -

- नवीन साहित्य का मुल्यांकन करना ।
- संस्था एवम् उससे संबंधित कार्य से विदेशो में प्रचलित अनुसंधान, नवीनतम प्रवृति, नई खोज तथा विद्‌वानों के क्रिया कलापों से परिचित होना तथा कार्य से संबंधित नई पाठ्य सामग्री के चयन हेतु नियमित रुप से साहित्य की समीक्षा एवम् अवलोकन करते रहना चाहिए ।
- विशिष्टता के आधार, मांग एवम् आवश्यकतानुसार ग्रंथों के विद्यमान संग्रह को अद्यतन बनाये रखना ।

  औद्योगिक पुस्तकालयों को पेंपलेट्स, पेंटेन्ट, कार्यवाही, अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओ एवम् सरकारी प्रकाशन, व्यापारिक समाचार पत्र , व्यापारिक पत्र , सर्वेक्षण साहित्य संस्था के अमुद्रित अभिलेख, कतरन, मानक, इंडेक्स, आंचलिक अध्ययन आदि विशिष्ट साहित्य का संग्रह करना एवम् उनको नवीनतम बनाए रखना है ।
- संदर्भ सेवा देना ।
- विकेंद्रीकरणत्मक कार्य करना ।
- आवश्यकतानुसार संस्थान, पुस्तकालय और प्रलेखन केन्द्रो से सहायता प्राप्त करना ।
- माल के अनुसार प्रतिलिपिकरण एवम् अनुवाद सेवा का कार्य करना ।
- सुचना एवम् साहित्य की खोज में पाठको का मार्ग दर्शन करना (जो कि संदर्भ सेवा का ही भाग है)
- संस्था के कार्य एवम् विषयों पर प्रकाश डालने वाली पाठ्य सामग्री का संकलन करना एवम् उसे पाठको के समक्ष प्रस्तुत करना ताकि पाठक पुस्तकालय के कार्य से भली भांति परिचित हो सके ।

- नवीनतम् साहित्य जो पुस्तकालय में आते है उनका प्रदर्शन करना ताकि पाठकों को उनके संबंध में ज्ञान हो सके ।
- इन उपरोक्त के अलावा पाठकों को पुस्तकालय उपयोग हेतु प्रेरित करने के लिए ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करना ताकि पुस्तकालय के प्रति पाठकों की रुचि जागृत हो एवं पुस्तकालय का भरपूर उपयोग कर सके। खासकर,चिकित्सा, जेल,विकलांग,बाल पुस्तकालय में ऐसे कार्यक्रम आवश्यक है ताकि वे पुस्तकालय का उपयोग कर स्वस्थ,स्वच्छ एवं संबल मानसिकता वाले व्यक्ति के रुप में अपना परिचय समाज में दे सके ।

पुस्तकालय के अध्ययन (इतिहास,महत्व,प्रकार,कार्य आदि) से ही इसकी समाज में उपयोगिता का पता चलता है । सभ्य समाज चाहे वह प्राचीन समाज रहा हो या आधुनिक वर्तमान समाज पुस्तकालय की महत्ता सभी युगों में बराबर रही है एवं इस ओर कार्य भी किए गए हैं। ये अलग तथ्य है कि प्राचीन युग में समाज का विशेष वर्ग ही उसका उपयोग करता था एवं उसके महत्व को समझता था परन्तु जैसे-जैसे विश्व के समाज में शिक्षा का व्यापक प्रसार होता चला गया वैसे-वैसे पुस्तकालय के महत्व को भी अधिक तीव्रता से महसूस किया जाने लगा है । पुस्तकालय का सामान्य एवं प्रारंभिक परिचय ही उसके सामाजिक महत्व को स्वीकार करने के लिए बाध्य करता है इसी तारतम्य में पुस्तकालय एवं समाज के संबंधों पर इस अध्याय के अगले चरण में प्रकाश डाला गया है ।

3.2 समाज

मानव शिशु जब जन्म लेता है तब वह मात्र एक हाड़-मांस का पुतला होता है न तो वह यह जानता है कि कौन उसके माता-पिता हैं तथा किस व्यक्ति से उसके क्या संबंध है । किन्तु प्रकृति द्वारा प्रदत्त उसे पांच वरदान यथा सीधे खड़े हो सकने की क्षमता, तीक्ष्ण व केन्द्रीत की जा सकने वाली दृष्टि, चारों ओर घुमाये जा सकने वाले हाथ, मेधावी मस्तिष्क तथा विचारों को आदान-प्रदान करने हेतु भाषा इन वरदानों की सहायता से, जिस स्थान पर वह जन्म लेता है, वह विकसित होता चला जाता है प्रारंभिक विकास में उसका परिवार उसके मानसिक व शारीरिक विकास में अपना योगदान देते है। परन्तु जैसे-जैसे वह बड़ा होता चला जाता है वैसे-वैसे उसका संपर्क परिवार के अलावा पड़ोस, स्कूल, सहपाठी व मित्र समूह से होता है। मानसिक व शारीरिक विकास के साथ इन संपर्कों का दायरा भी बढ़ता चला जाता है संपर्को के दायरे के फैलने के साथ-साथ उसे नवीन-नवीन बातों का ज्ञान भी होता है जिसकी सहायता से वह अपना विकास करता है, सीखने की इसी प्रक्रिया के तहत् वह एक विकसित व बुद्धिमान मनुष्य के रुप में स्वयं को स्थापित करता हैं।

उपरोक्त तथ्य एक व्यक्ति के विकास की कहानी कहते हैं। यह बात प्रत्येक मनुष्य के विकास पर लागू होती है। अर्थात प्रत्येक मनुष्य का शारीरिक व मानसिक विकास दूसरे मनुष्य, समूह पर निर्भर करता है । यह मनुष्य या समूह छोटे रुप में परिवार होता है तथा अनेक परिवार या समूह मिलकर समाज की स्थापना करता है। अत: समाज वास्तव में परिवार का ही एक बड़ा रूप है। समाज मनुष्यों का

ऐसा समूह है जो आपस में एक दूसरे को आवश्यकता की पूर्ति करता है तथा एक दूसरे को सहयोग करता है। अत: समाज को निम्न रुप में हम परिभाषित कर सकते हैं -

"मनुष्यों के जीवन में एक दूसरे के साथ संबंधों का जाल सा बिछा हुआ है, समाज शास्त्र में उसी को समाज कहा जाता है "[1]।

राइट के अनुसार "समाज व्यक्तियों का समूह ही नहीं है यह समाज में रहने वाले व्यक्तियों के पारस्परिक संबंधों की एक व्यवस्था है।"[2]

प्रो0 डेविस के अनुसार "यह याद रखने योग्य बात है कि केवल सामाजिक सबंधों का ढेर ही समाज नहीं होता। जब सामाजिक संबंधों की एक व्यवस्था बन जाती है तभी हम उसे समाज कहते हैं।"

समाज की आवश्यकता

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह भी अपने जीवन को बनाए रखने के लिए समाज के अन्य लोगों पर निर्भर रहता है। एक किसान द्वारा उपजाई गई फसल का उपयोग डाक्टर, इन्जीनियर,शिक्षक,दुकानदार सभी करते हैं जबकि डाक्टर को उसी किसान के स्वास्थ्य की देखभाल करनी होती है, वहीं पर शिक्षक इन दोनों वर्ग को शिक्षित कर ज्ञानी बनाता है ताकि वे अपने क्षेत्र में प्रगति कर समाज को लाभ पहुंचाए। यह कल्पना से परे है कि मनुष्य अकेला जीवन यापन कर ले, किसी एक व्यक्ति के द्वारा प्राप्त किए गए ज्ञान/आविष्कार का महत्व तभी है जब उसका उपयोग दूसरे व्यक्तियों के कल्याण व विकास के लिए हो। अत: मनुष्य अपने विकास अपनी मानसिक सुरक्षा आदि का अनुभव अन्य मनुष्यों के साथ रहकर ही प्राप्त कर सकता है। जो कि व्यक्तियों द्वारा बनाए गए समाज में ही संभव है। इसके अलावा व्यक्ति में पारस्परिक प्रेम, सहयोग, सहनशीलता,सहिष्णुता, आज्ञापालन जैसे गुणों का विकास समाज के द्वारा ही होता है। समाज के द्वारा ही व्यक्ति समाज एवं परिवार के रीति रिवाज, परम्पराएं ,प्रथाएं,मूल्य तथा प्रतिमानों का पालन करना सीखता है। इस प्रकार समाज के द्वारा ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होने के साथ-साथ सामाजिक विकास होता है तथा वह एक सामाजिक प्राणी के रुप में अपनी पहचान बनाता है।

समाज एवं व्यक्ति का अंत: सबंध

सामाजिकता मानवता का अविभाज्य अंग है। प्रत्येक व्यक्ति जन्म से ही समाज का स्वत: सदस्य बन जाता है। ऐसा करना उसके लिए आवश्यक भी है। यह सत्य है कि सामान्यतया हर व्यक्ति अपने निकट रक्त -संबंधियों पर अधिक विश्वास करता है पर परिवार के सीमित क्षेत्रों के भीतर रहकर वह अपने व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास नही कर सकता है। समाज लोगों का एक बड़ा समूह होता है इस समूह मे हर व्यक्ति समाज के एक अंग के रुप में होता है तथा प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता और स्वभाव के

1- गुप्ता, एम.एल. एवम् शर्मा, डी.डी.: समाज शास्त्र: आगरा: साहित्य भवन, पेज-57

2- मुखर्जी, रविन्द्रनाथ एवम् अग्रवाल, भरत: समाज शास्त्र: इंदौर: शिवलाल एण्ड कंप नी, पेज-54

अनुसार कार्य करते हुए एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करता है। और अतंत: वह अपने को समाज से जुड़ा हुआ पाता है।

वस्तुत: मानव का स्वभाव ही कुछ ऐसा है कि वह जहाँ भी रहता है एक समाज बनाकर ही रहना चाहता है। अत: घर से आरंभ कर वह क्रमश: परिवार , ग्राम, नगर , राज्य और विश्व में जुड़कर एक समाज के निर्माण में अपना सहयोग प्रदान करता है। इन सबसे संबंध व संपर्क स्थापित किए बिना व्यापक स्तर पर उसका विकास एवं कल्याण संभव नहीं है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सामाजिक प्राणी के रुप में व्यक्ति की शैक्षणिक, राजनैतिक, नैतिक, धार्मिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उसे दूसरों के साथ संबंध स्थापित करना आवश्यक होता है। तथा सभी व्यक्तिओं को सुचारु व व्यवस्थित रुप से जीवन व्यतीत करने हेतु एक ऐसे माहौल की आवश्यकता होती है जो उसे मानसिक व बौद्धिक रुप से सहायता व सहयोग प्रदान कर सके, और यह सहयोग व सहायता उसे समाज में ही मिलता है। अत: व्यक्ति से समाज व समाज व्यक्तियों के लिए ही बना है ये एक दूसरे के पूरक है तथा व्यक्ति व समाज दोनों का उद्देश्य एक दूसरे का विकास करना है।

समाज के अध्ययन से यह पता चलता है कि यह व्यक्तियों का एक विशाल समूह है जो अपनी आवश्यकता के लिए अपना ज्ञान दूसरों को देने के लिए एक दूसरे को विभिन्न क्षेत्रों में सहायता एवं सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से विभिन्न स्तरो पर जुड़े होते हैं। यहाँ प्रश्न यह उठता है कि जब व्यक्ति स्वयं अपना विकास करेगा तभी वह अपना सहयोग समाज को दे पाएगा। इसके लिए आवश्यक है कि उसे समाज में हो रहे विभिन्न कार्यो, क्रियाकलापों, नवीन ज्ञान,नवीन आविष्कार, नयी-नयी जानकारी प्राप्त होती रहे। यह किसी भी व्यक्ति के लिए संभव नहीं है कि वह अधिक दिनों तक मौखिक रुप में जानकारियों, ज्ञान/आविष्कारो को याद रख सके अत: उसे इस ज्ञान को विभिन्न रुप में संग्रह कर एक निश्चित स्थान में रखने की आवश्यकता होती हैं ताकि समाज का दूसरा व्यक्ति उसका उपयोग कर अपना विकास कर सके। तब यहाँ एक ऐसी संस्था की आवश्यकता होती है जो कि इन ज्ञान के भंडार को सहेज कर रखे तथा उसे वर्तमान एवं भावी समाज के सम्मुख प्रस्तुत करें, ऐसी संस्था के रुप में पुस्तकालय ही दृष्टिगोचर होता है जो कि अपने यहाँ संग्रहित पाठ्य सामग्री समाज को प्रदान कर सकते है जिसकी सहायता से समाज अपना विकास कर सकता है जो समाज और पुस्तकालय के मध्य संबंध को इंगित करता है जिसकी विवेचना आगे की गई है।

3.21 पुस्तकालय एवं समाज

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज रिश्तो का एक जाल है। एक सामाजिक प्राणी होने के कारण मनुष्य एक दूसरे से बात करना और संपर्क रखना चाहता है क्योकि समस्त प्राणियों में से मनुष्य जाति में ही बाते करने का गुण विद्यमान है। अपने विचारों को प्रकट करने के लिए मनुष्य बहुत से तरीके अपनाता है। अपने विचारों से अपने विश्वास (बिलिव एंड फेथ) उसकी शक्ति, पसंद नापसंद

करने का निर्णय आदि व इन सब से दूसरो को अवगत कराने के लिए मनुष्य इशारे से , चेहरे के पेशियो से भाव उत्पन्न करके, विभिन्न तरीको की आवाज निकाल कर और चिल्लाकर दूसरों को अपनी भावनाओं/ विचारों से अवगत कराता है। इन तरीको से वह दूसरो को आसानी से अपनी आंतरिक स्थिति के बारे में बताता हैं। इनके अलावा छुकर, चित्रो द्वारा, इशारो से, गणितीय चिन्हों, वैज्ञानिक चिन्हों , नाच-गाकर और अधिकांश तौर से शब्दों से जो बोला एवं लिखा जाता है अपने विचारों से अन्य को अवगत कराता है।

यदि हम जीवन के आंरभिक दिनों के संबंध में देखें तो शुरु के शुरुवात में बिना शब्द के शुरुवात हो ही नही सकता था। आदिम जाति मनुष्य सदियों से अपनी राह बनाते हुए उस मुकाम तक पहुंचे जब उन्हें एक सभ्य इतिहास के रुप में पहचाना जाने लगा, वो अपने अनुभव, विचार अपने साथियों , अपने समूहों के साथ बांटने लगा। बोली जो शब्द बोला जाता था, वही आगे चलकर भाषा के रुप में परिवर्तित हुआ। भाषा के विकास के साथ-साथ लेखन का भी विकास हुआ हांलाकि इसका प्रांरभिक स्वरुप अलग था, पर यही साहित्य की नींव बनी। बोली जो भाषा की एक ईकाई के लिए एक महत्वपूर्ण व प्रशंसनीय उपलब्धि थी यही एक मोड़ था जो बढ़ते हुए समाज को और आगे ले जाते गया। वर्तमान में भी हम यह महसूस कर सक्ते है कि मनुष्य के विकास के लिए भाषा (जिसे हम संचार का प्राथमिक चरण कह सकते है) कितना महत्वपूर्ण है।

यदि बोली मनुष्य जाति के विकास में एक बहुत बड़ा कदम था, तो दूसरा बड़ा कदम था लिखना, लिखित शब्दों के द्वारा इतिहास हमेशा के लिए लिपि बद्ध किया जा सकता था,जिसके माध्यम से विचारों, तथ्यों, खोजों, परिणामों को विस्तृत रुप से एक युग से दूसरे युग में दिया जा सकता था तथा इन सब उपलब्धियों के रिकार्ड युगों-युगों तक भावी समाज के लिए सुरक्षित रखे जा सकते थे। और इस प्रकार सुरक्षित विचारों को जानने व समझने के लिए भूतकाल व वर्तमान के मध्य और न ही दो मनुष्यों, दो समाज में किसी भी प्रकार का कोई अवरोध था।

समाज के विकास में तीसरा बड़ा कदम मुद्रण कला का आविष्कार था, मुद्रण कला के आविष्कार के साथ ही लिखित विचारों को और अधिक समय तक सुरक्षित रखने व उन विचारों को कई प्रतियों में छापकर अधिक मात्रा में वितरित किया जा सकता था जिसकी सहायता से सूचनाओं का संग्रह कर शिक्षा व अन्य सूचनाएं समाज के समस्त व भिन्न वर्गों तक पहुंचाया जा सकता था।

समाज के विकास में एक चमत्कारिक मोड़ हम तब मान सकते हैं जब संचार माध्यम के रुप में इलेक्ट्रानिक माध्यम का समाज में प्रादुर्भाव हुआ। रेडियो, टी.वी., टेलीफोन, टेलीग्राफ, उपग्रह प्रणाली, कम्प्यूटर आदि संचार के ये ऐसे नवीन उत्कृष्ट माध्यम है जो लोगों को उनकी अभीष्ट सूचना प्राप्त करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते है।

वर्तमान समय में मनुष्य जाति इन आधुनिक संचार के माध्यमों के बिना स्वयं को पंगु महसूस करता है एवं अपने व समाज के विकास में इन माध्यमों की जरुरतों को महसूस करता है। संचार

के विभिन्न माध्यमों ने मनुष्य की कार्य शक्ति को कई गुना बढ़ा दिया है जिसके फलस्वरुप वह अन्य ग्रहों में पहुंचने, पृथ्वी का चक्कर लगाने, चन्द्रमा में उतरने, मंगल ग्रह के संबंध में तथ्यों का पता लगाने, अंतरिक्ष में रहकर वैज्ञानिक कार्य करने जैसे अनेक कठिन कार्य निडरता से संपादित करते आ रहा है। चन्द्रमा पर पैर रखना मनुष्य जाति का पहला बड़ा कदम था इतिहास में,भविष्य मे मनुष्य को अपने विकास के लिए ऐसे कई मौके मिलेंगे जिसके संबंध मे वर्तमान मे कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

मनुष्य के विकास की इस द्रुतगति के पीछे किसी एक व्यक्ति या एक मौके का हाथ नही है। यदि हम इन विकास क्रम को देखे तो स्पष्ट रुप से ग्रंथालय का संबंध एवं सहयोग इस विकासक्रम में दिखाई देता है। यदि हम समाज एवं ग्रंथालय के रिश्तो को देखे तो हमारा मन मस्तिष्क जहां तक भूतकाल मे जाता है वहां तक समाज को ग्रंथालय से जुड़ा हुआ पाते है।

पुस्तकालय के इतिहास के अध्ययन से यह पता चलता है कि 18 वीं सदी तक पुस्तकालय में पुस्तकों व साहित्य का जो संग्रह किया जाता है उसका उपयोग समाज के विशेष व उच्च वर्ग द्वारा ही किया जाता था, इसके बावजूद ग्रंथालय का इतिहास यह बताता है कि समाज के साथ यह अभिन्न रुप से जुड़ा था। ग्रंथालय ज्ञान का एक भंड़ार है जिसे मनुष्य सदियों से संग्रह करता आया है ताकि उसका उपयोग वह स्वयं व उसके आने वाली पीढ़ी अपने लिए कर सके, उसकी सहायता से वह अपने सांस्कृतिक विरासत को भावी पीढ़ी के लिए जैसा का वैसा रख सकता है जो कि मनुष्य जाति की शिक्षा के लिए अति महत्वपूर्ण है।

समाज में ग्रंथालय की उपस्थिति समाज मे निहित व्यक्तियों के व्यक्तित्व के विकास के लिए अति आवश्यक है। ग्रंथालय का स्वरुप समाज की जरुरतों के अनुसार समय-समय पर बदलता रहा है, परन्तु उसका उद्देश्य एक ही रहा है- समाज की बौद्धिक आवश्यकता की पूर्ति करना। ब्रिटेन के प्रोफेसर डब्ल्यू.जी.एस. एडम्स ने केरीज यूनाइटेड ट्रस्टीज को 1915 मे एक रिपोर्ट सौंपा था जिसमें उन्होंने कहा था कि "आज जो पुस्तकालय आंदोलन चल रहा है वह गांव व शहर दोनो के लिए उम्मीदो से भरा पड़ा है। यह एक कठिन तथ्य है कि हम ये पता लगा सके कि किताबों का असर समाज पर किस रुप में पड़ रहा है परन्तु यह निर्विवाद सत्य है कि साहित्य का प्रेम हर युग में खुशहाली बढ़ाता है तथा विचार धारा एवं ज्ञान का वितरण जो पुस्तकालय के द्वारा होता है वह समाज को आगे बढ़ा सकता है। ये विचारधाराएं ही है जो समाज को उन्नति के पथ पर ले जाती है। कोई भी समाज तब तक सच्चे तौर पर प्रजातंत्र को नहीं पा सकते जब तक देश मे पूरी तरह से शिक्षित लोग न हो। अच्छी किताबे व साहित्य हमेशा अच्छी विचारधारा को जागृत करते है तथा पुस्तकालय हमेशा ऐसे साहित्य उपलब्ध कराता है। पुस्तकालय खास उन लोगो को ऐसे सही व विचारशील साहित्य उपलब्ध कराये जो दूसरो की विचार धारा से जल्दी प्रभावित होते है"[1]। एडम्स रिपोर्ट का यह सार इस बात की ओर इंगित करता है कि साहित्य जो पुस्तकालय में विद्यमान होते है वह व्यक्तियों

1- Harison, K.C. : The Library and the Community, Page - 13

की मानसिकता को प्रभावित करते है, वे मनुष्य के विचारधारा में बदलाव लाते है इन विचारधाराओ का बदलाव यदि सही दिशा में हो रहा हो तो उस समाज की उन्नति निश्चित है। अतः पुस्तकालय समाज की मानसिकता में बदलाव लाने में एक उत्प्रेरक का कार्य करता है।

ग्रंथालय को हम समाज का दिमाग कह सकते है और यह बुद्धि का केन्द्र भी है जो कि समाज के जीवन को सही मोड़ पर जाने में सहायता करता है। वर्तमान मे ग्रंथालय एक सामाजिक संस्था के रुप में मानी जाती है जो समाज के सामाजिक, आर्थिक , राजनैतिक, शैक्षणिक व सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखते है एवं समाज को प्रगति के पथ पर ले जाने मे अपना योगदान देते है। ये महान सभ्यताओं की निशानी है ये ही वर्तमान समाज को सही रास्ता दिखाता है शिक्षा के लिए प्रेरित करता है, सामाजिक कल्याण, आर्थिक उत्थान, राजनैतिक परिपक्वता एवं समाज में शांति के लिए व्यक्तियों की सहायता करता है। इस तरह से पुस्तकालय समाज के हर क्षेत्र में अपनी सहायता उपलब्ध कराता है। तब समाज को यह मानना चाहिए कि ग्रंथालय उनके जीवन स्तर को सुधारता है।

अतः ग्रंथालय एवं समाज के मध्य एक मजबूत बंधत्व है जिसके कारण पुस्तकालय समाज की उन्नति के प्रति हमेशा अपना झुकाव प्रदर्शित करता है। यथा -

- ग्रंथालय समाज के राजनैतिक एवं सांस्कृतिक ऊंचाईयों को छूने में उसकी सहायता करता है जिसके तहत वह ज्ञान को एकत्रित कर संग्रहित करता है एवं उसके उपयोग, उसके समाज तक पहुचाने एवम् उसे बढ़ाने की दिशा में अपना कार्य करता है।
- शांति के समय वह समाज के सांस्कृतिक एवं बौद्धिक क्रियाकलापों को बढ़ाने के लक्ष्य में लगा रहता है।
- जब व्यक्ति स्वयं एवं समाज को सुधारने के लिए आगे बढ़ता है तब वह पाठ्य सामग्री की सहायता से दूसरो को सहयोग करता है।
- बौद्धिक एवम् शोध संबंधी क्रिया कलापो को बढ़ावा देने के लिए भारी मात्रा में एवम् विभिन्न प्रकार की अध्ययन सामग्री पाठको को उपलब्ध कराता है।

इसके अलावा आर्थिक तरक्की , राष्ट्रीय शक्ति एवं अन्तर्राष्ट्रीय समाज में उसकी ठोस स्थिति आदि ऐसे कई बिन्दू है जिसमें समाज व व्यक्ति की स्थिति को सुदृढ़ बनाने में पुस्तकालय अपना योगदान देते है व समाज के प्रति अपने कर्तव्य को पूरा करते है।

यूनाइटेड किंगडम के लाइब्रेरी एसोशियेशन ने 1942 में लायल आर. मेकालविन की एक रिपोर्ट प्रकाशित की जो ग्रंथालय के समाज के प्रति उत्तरायित्व को बताता है, इस रिपोर्ट का सार है '' ग्रंथालय सेवा सिर्फ सेवा करने के लिए स्थापित हुआ है जिसका कार्य बिना पूछे एवं बिना किसी सीमा में बंधे ज्ञान का वितरण करते जाना है। ग्रंथालय एक ऐसा स्थान है जो प्रत्येक पाठक के मन को संतुष्ट करता है इसीलिए ग्रंथालय एक सार्वभौमिक व समस्त वर्गो को एक साथ लेकर चलने वाला है। ग्रंथालय प्रत्येक दृष्टि से स्वतंत्र होना चाहिए जो मनुष्य के आर्थिक व सामाजिक स्तर को नजर अंदाज कर समस्त

वर्ग को ग्रंथालय सेवा दे। ग्रंथालय इस रुप मे भी स्वतंत्र होना चाहिए कि समस्त प्रकार के विचारो को यहां स्थान मिले और यह समस्त प्रकार के ज्ञान प्राप्त करने का स्थान हो तथा यह ज्ञान के प्रचार, प्रसार का एक शक्तिशाली माध्यम बने "[1]।

यूनाइटेड किंगडम के लाइब्रेरी एसोसियेशन में मेकालविन के इस रिपोर्ट के साथ अपने सुझाव जोड़ते हुए ग्रंथालय के सामाजिक संबंधो पर कहा कि "मनुष्य जाति का विश्व में आदर बढ़ाने के लिए ग्रंथालय एक अच्छा मौका हो सकता है, ग्रंथालय कई शक्तियों में से एक शक्ति है जो मनुष्य को सुदृढ़ बना सकता है वह मनुष्य के सोचने की शक्ति को बढ़ा सकता है। मनुष्य जाति के गुणों में वृद्धि करने में ग्रंथालय एक महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है। ग्रंथालय शिक्षा संस्थानों का एक अंग है जो शिक्षा का उपयोग कर अपने मस्तिष्क को आगे बढ़ाने मे व्यक्ति की सहायता करता है। ग्रंथालय प्रत्येक मनुष्य को अपना मानसिक स्तर बढ़ाने में, साहित्य से लाभ लेकर अपनी खुशहाली बढ़ाने मे उसकी सहायता करता है। ग्रंथालय की स्वतंत्रता और उसका विशाल साहित्य (जो विभिन्न विषय के होते है) समस्त किस्म की विचारधाराओ को स्वीकार करने के लिए बना है"[2]।

इस प्रकार पुस्तकालय समाज का एक अविभाज्य अंग है प्राचीन समय से वर्तमान आधुनिक समय तक पुस्तकालय समाज में किसी न किसी रुप में संबधित रहा है। प्राचीन काल में भी राजा महाराजा एवम् संपन्न वर्ग पुस्तकालय का उपयोग अपने ज्ञान अर्जन मे व अपनी संस्कृति व सभ्यता को बनाए रखने के लिए करते थे वर्तमान में भी उसका मूल स्वरुप उसी रुप मे विद्यमान है तथापि यह किसी वर्ग विशेष व विशेष समाज या व्यक्ति का न होकर समस्त जनो का हो गया है। पुस्तकालय एक ऐसा स्थान है जो बिना रंग भेद, वर्ण भेद, लिंग भेद तथा पंथ व धर्म भेद के सर्वसाधारण के लिए अपने द्वार खुला रखता है। वर्तमान समय मे पुस्तकालय निम्न रुपो में समाज से जुड़ा हुआ है -

1. मानव अधिकार और पुस्तकालय:- विश्व मानवीय अधिकार उद्घोषणा की धारा 26 और 27 में कहा गया है कि " प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा एवं समुदाय के सांस्कृतिक जीवन मे भाग लेने का अधिकार है एवं उसे वैज्ञानिक प्रगति और विकास से लाभान्वित भी होना चाहिए "[3]। किन्तु इन अधिकारों की पूर्ति बहुत आसानी से संभव नही है अत: हम ऐसे सामाजिक तरीका खोजे जो मानवीय अधिकार के उद्देश्यों की पूर्ति कर सके। ये अधिकार मनुष्य के विकास के बिना मिलना संभव नही है और शिक्षा, विज्ञान व संस्कृति विकास के निर्णायक पक्ष है। तब यह विकास ऐसे ज्ञान के प्रसार पर निर्भर करता है जो लिखित व मुद्रित साहित्य के रुप में विद्यमान है तब यहां पुस्तकालय ही एक उत्तरदायित्व पूर्ण संस्था नजर आती है जो मनुष्य के मन मस्तिष्क के विकास के लिए ऐसे अभिलेख उपलब्ध कराती है।

1- Harrison, K.C. : The Library and the Community, Page -16

2 - Harrison, K.C. : The Library and the Community, Page -17

3- सहाय, श्रीनाथ: पुस्तकालय एवम समुदाय: पटना: बिहार ग्रंथ अकादमी, पेज-285

2. सर्वव्यापी शिक्षा और पुस्तकालय :- सर्वव्यापी शिक्षा के प्रसार में आने वाली अनेक बाधाओं ने भारत जैसे देश की अधिकांश जनसंख्या को सुविधा रहित बना रखा है। परन्तु अब अशिक्षित समाज भी अपने को बाहरी व विकसित समाज से अलग-थलग पड़ने के कारणों के प्रति चिंतित दिखाई देते है। हालांकि यह चेतना गांव में रहने वाले छोटे-छोटे समाज में कम हो सकती है परन्तु अधिकांश स्थिति में ग्रामीण समाज अशिक्षा को सामाजिक कलंक मानते है क्योंकि ये नगरों के संपर्क मे रहना चाहते है जो कि वाणिज्य, व्यापार एवं संचार माध्यमों द्वारा ही संभव है। वाणिज्य व्यापार हेतु आज की परिस्थिति किसान से उसके वैज्ञानिक ज्ञान के विकास की मांग करती है। बीज, खाद, सिंचाई, कृषि को पद्धति, पशुपालन, मत्स्य पालन (जो कि ग्रामीण क्षेत्र का महत्वपूर्ण व्यवसाय है) के क्षेत्र मे वृहद अनुसंधान भारत तथा विश्व मे किए जा चुके है किन्तु दुर्भाग्य से उसका लाभ कृषको तक अभी तक पुरी तरह से नही पहुंच पाया है। ये तमाम ऐसी बाते है जो गांव को आज भी शहर से अलग किए हुए है जिसका प्रमुख कारण निरक्षरता एवं उसका परिणाम उनके शोषण से है, तब ग्रामीण व ऐसे क्षेत्र मे जहां उसका विकास मार्ग अवरुद्ध है, को ऐसे वातावरण से परिचित कराया जाए जिससे वे अपने स्वयं के उत्थान के लिए कार्य कर सके। तब पुस्तकालय निम्न रुपों में उनकी सहायता करता है-

- साक्षरता केन्द्र के रुप में पुस्तकालय उन्हें पठन पाठन की ओर प्रेरित करे। निरक्षर व व्यस्क को विभिन्न श्रव्य-दृश्य साधनो से आकृष्ट करे। कम शिक्षितो को पठन की ओर प्रेरित करने एवं व्यवसाय और काम की शिक्षा के अतिरिक्त उनके व्यवसाय को अधिक उन्नत करने संबंधी मनोरंजक ढंग से पठन सामग्री उपलब्ध कराए। छोटी चित्रित पुस्तके, एवं सरल समाचार पत्र/पत्रिका उनमे पठन रुचि जागृत करने मे सहायक हो सकती है।
- शिक्षाप्रद भूमिका में पुस्तकालय निरक्षरता की समस्या हल करने के अतिरिक्त शिक्षा के एक सहायक के रुप में विकसित ज्ञान व आधुनिक दृष्टिकोण की चेतना लोगो में जागृत कर युवाओं को नई चुनौतियों के लिए तैयार करती है। इसके अलावा नयी पीढ़ी को बदलते हुए मूल्यों और आदर्शो को स्वीकार करने के लिए सोचने पर मजबूर करती है तथा राष्ट्र एवं समुदाय को सही दिशा में सोचने योग्य बनाने मे सहायक होती है।

3. उन्नत व्यक्तित्व के निर्माण, उद्देश्यपूर्ण व उत्पादक शिक्षा के लिए जो मानवीय सोच को परिष्कृत करने हेतु पुस्तकालय सेवा की आवश्यकता शिक्षा शास्त्रियों द्वारा हमेशा से की जाती रही है। पुस्तकालय संकीर्ण व्यावसायिक कार्यक्रम के विस्तार हेतु कार्य कर सकती है तथा ग्रामीण क्षेत्र में जहां तकनीकी चतुराई की कमी है, पुस्तकालय इस कमी को दूर करने मे सहायक हो सकती है। हालांकि सामाजिक समस्याओ का समाधान मस्तिष्क एवं आत्मा द्वारा होता है परन्तु इस संदर्भ में पुस्तकालय अत्यंत प्रभावकारी हो सकते है। इसी तरह ये मनुष्य के जीवन को सम्पन्न व विकसित करने व समाज को जोड़ने व संतुलित करने मे उल्लेखनीय योगदान दे सकते है।

4. तकनीक व कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था में पुस्तकालय सहायक सिद्ध होती है। कृषक व वैज्ञानिक

दोनो को ही नवीन अनुसंधानो की जानकारी की आवशयकता होती है जो केवल पुस्तकालय द्वारा ही दी जा सकती है। इस तरह की सेवाओ के अभाव से किसी भी क्षेत्र का आर्थिक विकास का मार्ग अवरुद्ध हो सकता है।

5. पुस्तकालय विभिन्न रुपो मे समाज सेवा का भी कार्य करता है। विशिष्ट पुस्तकालय जो कि विशिषट वर्ग के लिए होते है उनके मानसिक विकास व चेतना जागृत की दिशा में अपना कार्य करते है। चिकित्सा पुस्तकालय अस्वस्थ लोगों के लिए मानसिक रोगियों के लिए पुस्तकालय जेल पुस्तकालय कैदियो के लिए पुस्तकालय ये ऐसे कई पुस्तकालय है जो समाज के उन विशिष्ट वर्गो को उनकी मानसिक व शारीरिक स्थिति के अनुरुप पाठ्य सामग्री प्रदान कर उनमे आत्म विश्वास बढ़ाते है ताकि वे समाज में पूरे आत्म विश्वास व आत्म सम्मान के साथ जीवन व्यतीत कर सके।

3.22 ग्राम्य समाज एवं पुस्तकालय

पुस्तकालय एक ऐसा स्थान है जो बिना किसी भेदभाव के समस्त आगंतुक को अपनी सेवाएं देता है। परन्तु स्थान व समाज की आवश्यकता के आधार पर उसकी सेवाएं भिन्न-भिन्न हो सकती है। जहां एक ओर शहरी समाज में उच्च शिक्षित व अत्यंत जागरुक पाठक की सूचना आवश्यकता की पूर्ति करना ग्रंथालय का एक महत्वपूर्ण कार्य होता है वही ग्रामीण समाज मे उसकी सेवाएं मूल रुप में ग्रामीण समाज को अपनी ओर आकृष्ट करना होता है ताकि वे पुस्तकालय सेवा के माध्यम से अपने विकास के मार्ग को स्वयं ढूंढ सके। फ्रेंक गार्डनर, जिन्हे एशिया की सार्वजनिक पुस्तकालयों को देखने समझने का अवसर मिला था, ने लिखा है कि '' यह सुनिश्चित है कि यूरोपीय और अमरीकी सार्वजनिक पुस्तकालयों से एशिया के पुस्तकालयों की तुलना करना संभव नही है। तथा इन पुस्तकालयो के तुलनात्मक सर्वेक्षण का न्यून लाभ एशिया में पुस्तकालयों की स्थापना रखरखाव विकास के संदर्भ में प्राप्त किया जा सकता है।''[1] गार्डनर का यह मत भारत के ग्रामीण पुस्तकालयो के संदर्भ में भी खरा उतरता है। अशिक्षा अथवा शिक्षा के समुचित स्तर के अभाव के कारण ग्रामीण समुदाय पुस्तको अथवा समाचार पत्रों के अध्ययन से वंचित ही रहते है। अभी भी ग्रामीण समदुाय केअधिकांश बच्चे स्कूली शिक्षा से अछूते है वे औपचारिक शिक्षा को अपने जीवन में सफलता की सीढ़ी नही मान पाते और न ही उनके अभिभावकों में इस संबंध मे अधिक जागरुकता आई है। इसके अलावा यह भी सर्व प्रचलित है कि किताबी (पाठ्यक्रम से संबंधित) ज्ञान अधिक उपयोगी नहीं है। ज्ञान अथवा आनन्द के लिए अध्ययन के लाभो से वे अपरिचित है। अभी भी पीढ़ियो से चला आ रहा मौखिक ज्ञान उनकी पूंजी बना हुआ है। इतना ही नही बाल्यावस्था से बच्चा मजदूरी करने लगता है और अध्ययन के प्रति उनमें आकर्षण उत्पन्न ही नही हो पाता। न्यूनतम उत्पादकता, बेरोजगारी, सामाजिक व आर्थिक पिछड़ापन ग्रामीण जीवन में सामान्य रुप से दिखाई देते है। परिणाम स्वरुप ग्रामीण समुदाय किसी तरह अपनी रोजी रोटी प्राप्त करने में ही अपना पूरा समय लगा देते है और वे उन मार्गो में चल ही नही पाते जिससे वे स्वयं को व परिवार को शिक्षित तथा आर्थिक व सामाजिक रुप

1- सक्सेना, एल.एस.: पुस्तकालय संगठन एवम् व्यवस्थापन: भोपाल:म.प्र.हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पेज-214

से सुदृढ़ बना सके।

ग्रामीण समाज की उपरोक्त स्थिति का मुख्य कारण उनमें आर्थिक संकट व जागरुकता की कमी है। इस बिन्दु पर हम विचार करे तो स्पष्ट होता है कि आर्थिक तंगी उन्हे किसी और दिशा में सोचने का अवसर ही नही देती। तब इनके उत्थान के लिए पुस्तकालय एक ऐसी संस्था के रुप में ग्रामीण क्षेत्र में स्थापित हो सकती है जहां से वे बिना किसी परेशानी के अपने आर्थिक उत्थान के प्रयास में हर दृष्टिकोण से सहायता ले सकते है जो कि धीरे-धीरे व अन्ततः उनके बौद्धिक व सामाजिक उत्थान के लिए भी सहायक सिद्ध होगा।

कोई भी व्यक्ति व समाज अपना विकास तो चाहेगा ही चाहे वह शहरी क्षेत्र का हो या ग्रामीण। अपनी मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति में संलग्न ग्रामीण अपने बौद्धिक व सामाजिक उत्थान के लिए आवश्यक जानकारी प्राप्त भी नही कर पाता. वह यह भी समझ नही पाता कि उसे ऐसी जानकारियां चाहिए जो उनको आर्थिक व सामाजिक रुप से ऊंचा उठा सके।

किसी भी समाज की जो कम से कम आवश्यकता है तथा जो हकीकत,व्यवहारिक व स्वीकृत आवश्यकता पर आधारित है, ये कारण हो सकते है जो कि क्षेत्र में ग्रंथालय की स्थापना व उसकी जरुरतो की बुनियाद बने। लोगो के अच्छे रहन-सहन, उनके अपने अधिकारों व कर्तव्यो की जानकारी, उनके आर्थिक व सामाजिक उत्थान के लिए आवश्यक जानकारी तथा उनके मनोरंजन के लिए क्या-क्या जरुरते है व इस संबंध में उनको कितनी जानकारी की जरुरत है ये ऐसे कुछ महत्वपूर्ण बिन्दू है जो उनके दैनिक जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है तब ऐसे मौकों पर ग्रंथालय शिक्षा, जानकारी, मनोरंजन और सांस्कृतिक जीवन के लिए समाज के ऐसे स्त्रोत के रुप में विद्यमान होता है जो प्रत्येक जन व प्रत्येक समूह की सहायता कर सकता है। ग्रंथालय समाज का एक ऐसा ज्ञान भण्डार है जिसका उपयोग समाज कभी भी कर सकता है व जो एक व्यक्ति व सामाजिक ग्रामीण समूह को लाभ पहुंचाए। यह एक दूत के रुप में आगे बढ़कर समस्त लोगो के लिए उपलब्ध हो व समाज की दिन चर्या का एक हिस्सा बन सके। ग्रंथालय नये-नये तरीको से लोगो और सामाजिक ग्रामीण समुदायो को अपनी ओर आकृष्ट कर सके। ग्रंथालय का कार्य व उसकी सेवाएं एक मापदण्ड बन सकते है जिससे किसी भी समाज के स्तर (बौद्धिक, आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक दृष्टिकोण से) को जाना जा सके। ग्रंथालय का स्थान सिर्फ पढ़ने लिखने के लिए ही नही होता, अपितु वह उन बातो के लिए भी सहायक सिद्ध होता है जो समाज के विभिन्न लोगो को एक स्थान पर एकत्र करता है व उन्हे मानसिक रुप से एक दूसरे से जोड़कर समाज का ताना-बाना बुनता है व समाज की संस्कृति बनाने में सहायता करता है।

किसी भी समाज में उनकी जानकारी की आवश्यकता को मुख्यतः चार भागों मे बांटा जा सकता है। **प्रथम** किसी भी समस्या के हल के लिए जानकारी की आवश्यकता, इस प्रकार की आवश्यकताएं पुस्तकालय को समाज के एक अंग के रुप में स्थापित करने मे सहायक होता है, **दूसरा** समाज की ऐसी आम जरुरते या रुचियां जो साधारण है तथा हमे पुस्तकालय का उपयोग करने हेतु प्रेरित

करती है, **तीसरा** ऐसी जानकारिया जो Unexpressed है अर्थात् जिसे व्यक्ति अभिव्यक्त नही कर पाता परन्तु उन तथ्यों या बातो को जानना उसकी प्रगति के लिए आवश्यक है , **चौथा** ऐसे विचार या सोच जो व्यक्तियों में जगे नहीं है तथा जिसे ग्रंथालय के माध्यम से जगाया या रुचि पैदा किया जा सकता है एवं ग्रंथालय इन सुप्त या सोये हुए विचारों को जगा सकता है। प्रत्येक समाज चाहे वह ग्रामीण हो या शहरी, समस्त लोगो की दिन चर्या में उपरोक्त चार प्रकार की सूचना/जानकारी की आवश्यकता पड़ती ही रहती है। जो पुस्तकालय के माध्यम से पूरी हो सकती है तथा इन जानकारियो को प्राप्त करने में ग्रंथालय उनकी भरपूर मदद कर सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में उपरोक्त चारो प्रकार की आवश्यकता की पूर्ति के लिए ग्रंथालय से ज्यादा बेहतर व उपयुक्त और कोई दूसरा स्थान नही हो सकता।

3.23 ग्रामीण समाज एवं उनकी सूचना आवश्यकता

सूचना क्या है ? सरल शब्दों मे सूचना का अर्थ है 'अर्थ पूर्ण वक्तव्य, मत, तथ्य, अवधारणा अथवा विचार' इस अर्थ में सूचना तथ्यात्मक ज्ञान अथवा विचारो का दूसरा नाम है। दूसरे शब्दो में सूचना वह है 'जिनका संप्रेषण संचार की प्रक्रिया द्वारा किया जाता है चाहे वह संदेश प्रतीक रुप में हो अथवा उद्धेलक के रुप में।' सूचना में ग्राह्यता होनी चाहिए वह एक संगठित अथवा सुस्थापित प्रतिमान के रुप मे संप्रेषित की जाती है मुख्यत: इसीलिए भी कि इस प्रकार के सुस्थापित प्रतिमान से उपयोगिता में वृद्धि होती है तथा इसका मुख्य उद्देश्य भी उपयोगिता प्रधान होती है। सूचना जब अर्थ पूर्ण तथा उपयोगी हो तो अर्थ के संप्रेषण तथा अपने उद्देश्य मे पूर्ति के बाद ज्ञान के रुप मे स्वीकार कर ली जाती है। ज्ञान की ग्रहण शीलता में वृद्धि के साथ-साथ अनुकूलन क्षमता मे भी वृद्धि होती है जो कि सूचना के प्रसारण का अंतिम लक्ष्य होता है।

सूचना का महत्व इसीलिए भी है कि सूचना संसाधन अथवा संपत्ति है , संपत्ति इसलिए क्योंकि यह एक तथ्य परक ज्ञान की थाती है। राष्ट्र की ईकाई के रुप में व्यक्ति की प्रगति के लिए सूचनाओं का अत्यधिक महत्व है यही कारण है कि सही प्रकार की सूचना की उपलब्धि अथवा प्रामाणिक और सामयिक जानकारी प्राप्त हो जाने से व्यक्ति अथवा राष्ट्र के समक्ष अनेक समस्याओ का समाधान संभव हो जाता है।

सूचना व जानकारी की आवश्यकता प्रत्येक वर्ग तथा प्रत्येक क्षेत्र के लोगों को है। ग्रामीण क्षेत्र में किस प्रकार की सूचना की आवश्यकता हो सकती है इस संदर्भ में पहले हम आधुनिक समाज में पुस्तकालय की क्या भूमिका होती है, इस संबंध में जानना चाहेंगे। यूनेस्को पब्लिक लाइब्रेरी मेनिफेस्टो में सार्वजनिक पुस्तकालय की प्रकृति तथा उद्देश्यों को इस प्रकार रेखांकित किया है-

'' यह मेनिफेस्टो जन समुदाय तथा राष्ट्र के बीच सौहाद्र और शांति की स्थापना हेतु अनिवार्य कड़ी और शिक्षा, संस्कृति और सूचनाओ के प्रसारण हेतु संलग्न विश्वसनीय संस्थान के रुप मे सार्वजनिक पुस्तकालयों में विश्वास प्रकट करता है। सार्वजनिक पुस्तकालय शिक्षण की निरन्तर और जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया तथा मानवता की ज्ञान और संस्कृति के क्षेत्र में अर्जित उपलब्धियों में

प्रजातन्त्र के विश्वास को व्यवहारिक रुप से प्रदर्शित करने वाली संस्था है। सार्वजनिक पुस्तकालयों का दृष्टिकोण गतिशील तथा सार्थक होना चाहिए तथा सेवाओ की उपयोगिता और उनके उपयोग को बढ़ावा देना उनका व्यवहारिक लक्ष्य होना चाहिए ''[1]। भारतीय ग्रामीण समाज के संदर्भ में यदि पुस्तकालय के इन उदेश्यों को देखे तो उनका कार्य अत्यंत कठिन व संवेदनशील हो जाता है जहां आम नागरिक ये भी नही जानता कि उनको कैसी व किस प्रकार की जानकारी की आवश्यकता है। लेकिन उनको नवीनतम जानकारियो की आवश्यकता तो अवश्य है इन आवश्यकताओ में पहला है शिक्षा संबंधी जानकारी, दूसरा है मनोरंजन व तीसरा व महत्वपूर्ण है ऐसी सूचनाएं व जानकारी जो इन तक किसी भी माध्यम से पहुंच नही पाती जो उनकी प्रगति के नितांत आवश्यक है। ऐसी जानकारियां उन्हे पुस्तकालय आसानी से उपलब्ध करा सकती है। ग्रामीण समाज संकोच वश भी अपनी सूचना आवश्यकता के संबंध में खुलकर नही कह पाते। तब ग्रंथालय उनके इन संकोच को दूर करने बें मददगार हो सकता है तथा लोगो को ग्रंथालय सेवा के उपयोग के लिए इच्छुक बनाना व उनमें रुचि पैदा करने का कार्य आसानी से कर सकता है औ ये सत्य भी है कि ग्रंथालय एक ऐसी एजेंसी है जिसके जरिये सार्वभौमिक शिक्षा को बढ़ावा मिलता है। उसका यह कार्य भी है कि वह ऐसी जानकारियों का वितरण समाज में करे जिससे लोगों की मानसिक शक्ति व आत्म विश्वास में बढ़ोत्तरी हो सके ताकि वे अपने-अपने कार्यक्षेत्र में सही तौर पर कार्य कर सके व अपने स्वयं के एवं सामाजिक जीवन को ऊंचा उठा सके।

ग्रामीण अपनी सूचना आवश्यकता के बारे में सोचते ही नही और न ही उस ओर ध्यान देते है। वे ये भी नहीं जानते है कि उनकी जानकारी की आवश्यकता Information needs क्या-क्या है ? तब इन्हें किस प्रकार की सूचनाएं मिलनी चाहिए। गांव की जनसंख्या का लगभग 2/3 भाग कृषि उद्योग में लगे होते है जिसमें संपन्न किसान, मझोले व छोटे किसान व कृषि श्रमिक है। इन लोगो की जानकारी की आवश्यकता कृषि से संबंधित अधिक होती है। ऐसे मामलों में अनुदान, आर्थिक सहायता, ऋण सुविधा, खाद का वितरण और कृषि के नवीनतम औजारों से संबंधित जानकारी है जो कि पुस्तकालय के द्वारा दी जा सकती है। अशिक्षित ग्रामीण के लिए पुस्तकालय एक ऐसे अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र हो सकते है जो गांव को सामान्य प्रगति के लिए उन्हें आवश्यक शिक्षा प्रदान कर सके। गांव की आम समस्याएं गरीबी, छुआछुत, जाँतपात, स्वास्थ्य , खाद्य व पोषण, बच्चों की देखभाल, परिवार कल्याण आदि ऐसे अनेक बिन्दु है जिसमे ग्रामीण समाज आज भी पिछड़ा हुआ है तथा इस संबंध में उनके विचार कोई खास प्रगतिशील नही है इन जंजीरो को तोड़ना उनके विकास के लिए आवश्यक है ग्रंथालय इस बिन्दु पर भी अपनी महत्वपूर्ण सहभागिता दे सकता है। सूचना संबंधी सामान्य समुदाय की आवश्यकताओं की पूर्ति तथा राष्ट्र के बदले हुए सामाजिक/आर्थिक ढांचे के बदलते स्वरुप से स्वयं को जोड़ने की क्षमता का विकास करने वाली सभी सूचनाएं आवश्यक है। किन्तु ग्रामीण समुदायों में जिज्ञासा का सर्वथा अभाव रहता है। अत: उनसे प्रश्न कर

1- सक्सेना, एल.एस.: पुस्तकालय संगठन एवम् व्यवस्थापन: भोपाल: म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पेज-214

उनसे उनकी जानकारी की आवश्यकताओं को जानना अत्यंत कठिन है। इसलिए जिज्ञासा उत्पन्न कर उनकी आवश्यकताओं के बारे में जानना व उसे पूरा करना व उनकी समस्याओं को जानना एवं उनका समाधान करना आदि कार्य ग्रंथालय आसानी से कर सकता है।

कृषक तथा कृषि संबंधी कार्य में संलग्न व्यक्ति व परिवार को इनसे संबंधित सूचनाएं ज्यादा महत्वपूर्ण होगी वे निश्चित रुप से कृषि उपज में वृध्दि करना चाहते है अथवा फुर्सत के समय में लघु व कुटीर उद्योगों से कुछ धनोपार्जन करना। इस दृष्टि से विभिन्न अनुदानों ऋण और सुविधाओं , उत्तम बीज खाद और औजारों की प्राप्ति के संबंध में सूचनाएं प्राप्त करना उनकी प्रथम आवश्यकता होगी। ग्रामीण समुदाय में 70% लोग अशिक्षित व निर्धन होते है इस दृष्टि से समाजिक असमानताओं को दूर करने की दृष्टि से प्रयत्नों में संबंधित सूचनाएं उन्हें रुचिकर लगेगी। मकान संबंधी सूचनाएं व्यक्तिगत एवं सामुदायिक स्वास्थ्य, आहार-पोषण, शिशुओं को देखना तथा बिमारियों की रोकथाम, परिवार कल्याण, बेरोजगार, कृषि आश्रित उघोगों, आदि सामुदायिक और कल्याणकारी योजनाओं के संबंध में सूचनाएं उनके आम जीवन के लिए मार्ग प्रशस्त करेंगी। ग्राम में होने वाले उत्पादों की उचित विपणन व्यवस्था भी रुचिकर विषय है। उसी प्रकार ग्रामीण समुदायों में विशिष्ट वर्गो तथा महिलाओं, युवा, शिशु, हरिजन और आदिवासी वर्गो को मिलने वाली जनसुविधाओं संबंधी सूचनाएं महत्वपूर्ण है।तब पुस्तकालय ग्राम वासियों में जिज्ञासा जागृत कर ग्राम समुदायों को पुस्तकालयों से लाभान्वित होने के अवसर प्रदान कर सकते हैं। पुस्तकालय में उपलब्ध सूचनाएं सामाजिक होने के साथ-साथ प्रामाणिक भी होते है जिससे ग्रामवासी पुस्तकालय सेवा के माध्यम से अपने उत्थान व विकास के पथ पर आगे बढ़ सकते हैं अन्य समस्याओं और विकास कार्यक्रमों के अतिरिक्त इन के माध्यम से ग्रामवासियों के सामाजिक समस्याओं जैसे छुआछुत निषेध, बाल-विवाह, दहेज निषेध, कन्यायों को नि:शुल्क शिक्षा सेवा , वृद्धों और असहायों को मिलने वाले पेंशन सुविधाएं, कृषि श्रमिकों के लिए न्यूनतम वेतन, शिक्षा समस्याओं में तथा सार्वजनिक क्षेत्र में रोजगार संबंधी आरक्षण छात्रवृत्ति आदि के विषय में सूचनाएं प्रदान की जा सकती है।

निष्कर्ष

पुस्तकालय की अवधारणा प्राचीन युग से ही है। प्राचीन समय में यह मंदिर मस्जिद व मठो में स्थापित था तब के समाज में शिक्षित वर्ग का समूह छोटा होता था परन्तु उनमें पुस्तकालय के प्रति लगाव था। पुराने समय में राजा,महाराजा या संपन्न व्यक्ति अपना व्यक्तिगत पुस्तकालय रखते थे चूँकि उस समय शिक्षा का प्रसार इन वर्गो तक ही सीमित था अत: पुस्तकालय का उपयोग भी इन वर्गो तक ही हुआ करता था तथापि यह सिध्द होता है कि लिखित मुद्रित साहित्य की उपयोगिता को उस युग में भी माना जाता था तथा उनका संग्रह करना व उन्हें सुरक्षित भावी-पीढ़ी के लिए रखना तब भी आवश्यक माना गया था। पुस्तकालय की उपयोगिता व उसकी आवश्यकता आज भी अपने उसी अर्थ व मूलभूत उद्देश्य के साथ

अपना दायित्व पूरा कर रहा है। आज प्रत्येक व्यक्ति पुस्तकालय के महत्व से परिचित है तथा अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए वह पुस्तकालय को अपना निकटतम मित्र मानता है जो बिना किसी स्वार्थ के उसको सहयोग देता है। पुस्तकालय भिन्न-भिन्न रुपों में अपने दायित्वपूर्ण का निर्वहन कर रहा है। पुस्तकालय लोगो का केवल शैक्षणिक स्तर ही नही बढ़ाता अपितु सामाजिक व सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति में भी सहायक होता है। पुस्तकालय की उपलब्धियाँ पुस्तकालय के सामाजिक कार्य को भी बताती है। पुस्तकालय एक सामाजिक संस्था के रुप में समाज के विभिन्न वर्गो को समान रुप से उनकी उन्नति में सहायता करता है यह प्रगति चाहे शैक्षणिक हो,सामाजिक,राजनैतिक अथवा सांस्कृतिक रुप में हो। पुस्तकालय न केवल विभिन्न श्रेणी,जाति और स्तर के लोगो का बौध्दिक केन्द्र हो सकता है अपितु यह व्यक्तियों को सामाजिक आदर्श प्राप्त करने तथा सामाजिक घटो के निर्माण में भी सहायता करता है। पुस्तकालय में आने वाले विभिन्न वर्ग व उम्र के लोगो के मध्य दूरी समाप्त कर मित्रता उत्पन्न कर आपसी भाई चारा व सद्भावना बढ़ाने के केन्द्र के रुप में भी यह दिखाई देता हैं। पुस्तकालय जैसी संस्था तथा समाज,जिसकी वह सेवा करता है, के बीच एक महत्चनूर्ण अन्त: संबंध हैं। यदि समाज को ज्ञान की वृद्धि के लिए पुस्तकालय की आवश्यकता है तो पुस्तकालय का विकास भी समाज पर निर्भर है। जहाँ शिक्षा, विज्ञान, सभ्यता व संस्कृति है वहाँ पुस्तके,साहित्य व पाठ्य सामग्री अवश्यंभावी है और जहॉ लिखित व मुद्रित पाठ्य सामग्री है वहाँ पुस्तकालय अवश्य विद्यमान होगा। अत: पुस्तकालय की उपलब्धता तथा पाठ्य सामग्री की विविधता समुदाय की जागरुकता व उसके उद्बोधन का सूचक माना जा सकता है।वास्तव में आज पुस्तकालय समाज के लिए इतना महत्वपूर्ण बन चुका है कि इसके बिना समाज पंगु हो जाता है तथा उसके समस्त विकास एवं कार्य अवरुध्द हो सकते है। यही कारण है कि पुस्तकालय आज एक सामाजिक संस्था के रुप में अपना स्थान बना चुका है जो कि समाज में साहित्य व साहित्यिक प्रवृत्तियों के विकास,आर्थिक,सामाजिक, शैक्षणिक व मनोरंजन आदि जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति एवं उपयोगिता को सिध्द करता है।

अत: यह कहा जा सकता है कि पुस्तकालय समाज, समुदाय में एक जीवंत शक्ति के रुप में विद्यमान है उसमें समुदाय का स्वभाव-स्वरुप परिवर्तित करने,समाज को विकसित करने,समाज को समृध्द व सुदृढ़ करने की असीम क्षमता है जिसका भरपूर दोहन कर कोई भी समाज उन्नति की उचाईयों को छु सकता है तथा विश्व में अपनी ठोस उपस्थिति दर्शा सकता हैं।